CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

नये वंदनवार

बा०
120

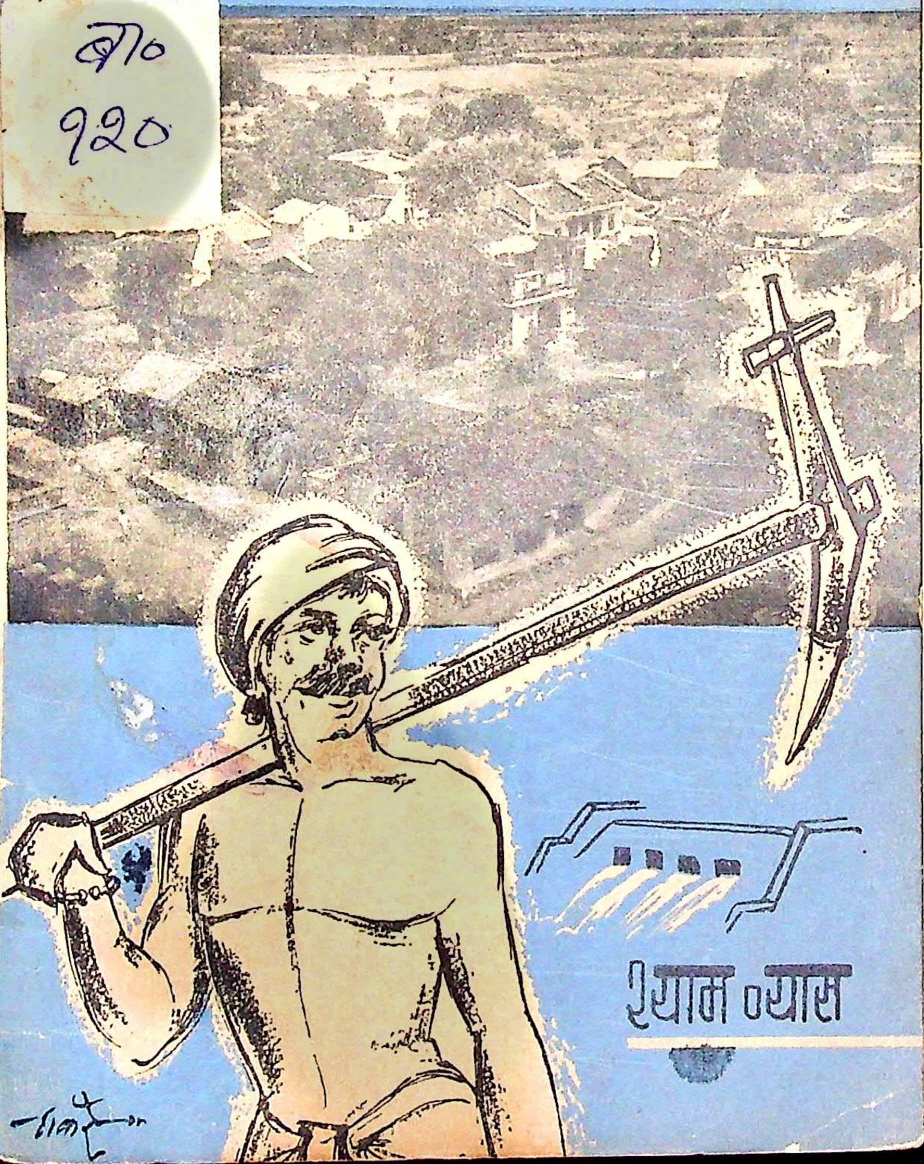

श्याम व्यास

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

नयी ज़िन्दगी की तस्वीरें

नये बंदनवार

(रिपोर्ताज़)

लेखक

श्याम व्यास

प्रमुख वितरक

तुलसी साहित्य सदन

खजूरी बाजार, इन्दौर.

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

नये बंदनवार

*

लेखक
श्याम व्यास

*

प्रकाशक
साहित्य साधना मन्दिर,
नसिया रोड, इन्दौर.

*

मूल्य : १ रु० ७५ न०पै०

*

प्रथम संस्करण
१५ अगस्त, १९६३. १२०० प्रतियां

आवरण : वामन ठाकरे

मुद्रक : नई दुनिया प्रेस, इंदौर।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

विंध्या की गोद में हुमसते सपने

धरती काली और पथरीली ! चारों ओर वृक्षों का बेतरतीब फैलाव ! आम और अंजन, नीम और ताड़ और इनके बीच कहीं-कहीं इमली का वृक्ष अपनी नरम-नरम पत्तियों में, कोपलों में और अपने फलों में खटास को लिए हुए ! धरती का फैलाव दूर-दूर तक अपने अंचल में पहाड़ियों और नदी-नालों को समेटे परिलक्षित होता है। विंध्याचल बूढ़े बाप की तरह इस समूचे अंचल पर अपनी ममता का, अपने प्यार का और स्नेह का वरद हस्त रखे हुए जैसे ऊंघता सा लगता है। उसे और कुछ देखने को रहा ही नहीं है—कब नरम-नरम, पनीली हवाएं उसे छू जाती हैं और कब बदलियों की अछूती भावनाएं

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

उसे शीश नवा जाती हैं, कब किसी भीनी कंठ से उठने वाली वंसी की तान उसकी देह को छूती है और कब इन्दर राजा आकाश में फनफनाता है, उसे किसी से कोई नाता नहीं ! वह ता चुपचाप बुड़ऊ की भाँति जीता है और अपने अस्तित्व के कारण बड़ा-बूढ़ा माना जा कर मान पाता है।

आज रविवार है और बदन में अनचाही सी ढिलाइयाँ ही तैर रही हैं। वैसे कल कोई पहाड़ उठाकर तो दौड़ना पड़ा नहीं था कि थकान आ जाये, लेकिन फिर भी न जाने क्यों बार-बार दोनों भुजाएं झटकने को तबियत कर रही थी और भुजाओं को छाती पर बाँध एक झटका देने में विशेष सुख की अनुभूति हो रही थी और मुंह यकयक खुल जाता और उसमें से ढेर सारी उसाँस निकलकर फैल जाती। कल शनिवार होने से स्थानीय थियेटर में सेकण्ड शो जरूर देखा था। वह भी श्रीमतीजी के आग्रह से ! फिल्म में कोई दम नहीं था लेकिन उसके गीतों की धुनें इन दिनों बेहद लोकप्रिय हो रही थीं और शायद उन्हीं की बलिवेदी पर मेरे पांच रुपयों को चढ़ना था। श्रीमती जी प्रसन्न थीं और उसी आवेग में वे ट्रे लेकर उपस्थित हो गयीं और अपनी प्रसन्नता का संदर्भ प्रस्तुत करते हुए बोलीं—

"उठियेगा नहीं, रात की पिक्चर का नशा क्या अभी भी चढ़ा हुआ है ?"

मैंने अलसभरी "हूं" भरी और चाय की प्याली उठाते कहा—"पिक्चर क्या, वोरियत रही !" श्रीमती जी को यह जुमला अखरा। लेकिन वे अपना मजा बिगाड़ना जरा भी नहीं चाहती थीं सो झट बोलीं—"अच्छा, अब जरा जल्दी से तैयार हो

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

जाइये ! आपको अभी मूसापुरा जाना है। सभी साथी आते होंगे आपके।"

"अरे बाप रे.... यह तो मैं भूल ही गया था!" मेरा भी कैसा स्वभाव है। अभी कल सुबह तो बात तय हुई थी और आज सुबह दिमाग खाली! अभी सब लोग एकत्रित हो जायेंगे और मैं हूं कि अभी भी पड़ा हूं। मैं झट उठ बैठा और प्याली को चाय से रीता कर तौलिया उठा भागा! श्रीमती जी की मुस्कुराहट मेरे पीछे थी।

अभी ठीक से बदन भी पोंछ नहीं पाया था कि जीप का हार्न चीत्कार कर उठा। मैं झुंझलाया सा, जल्दी-जल्दी तैयार हो बैठक में आया। देखा, सभी मेरी प्रतीक्षा में बैठे, श्रीमती जी की प्रशंसा करते हुए चाय पी रहे थे। मैं अपनी पत्नि की इस सुघड़ता पर मुस्करा दिया।

भोरास्कर जो सहकारी विभाग के अधिकारी थे, मुझे छेड़ते हुए बोले—आप क्या आज का प्रोग्राम भूल गये थे और हँस दिये। दूसरे साथी ने चर्चा चलाते हुए कहा... नहीं, आज रविवार का मूड है भाई का। वो तो अपन सब आ गए वरना ये दस बजे तो बिस्तर छोड़ते। एक कहकहा चाय की प्यालियों के ऊपर तैर गया। मैं बस मुस्कराता रहा और फिर पूछ बैठा....

"भई, साथ में खाने-पीने का सामान भी किसी ने रखा है या नहीं। ऐसा न हो कि सब कड़ाके करते लौटें और····

"और कभी मुसापुरा का नाम भी न लें।" बात डोलझाके ने पूरी की। डोलझाके मझोले कद के ठहाकाबाज व्यक्ति थे जो उद्योग विभाग के अधिकारी थे। आज अपने फुल सूट में थे यानी पेंट और उस पर बन्द कालर का कोट।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

"क्या धज है साब आपकी। मैंने छेड़ा। आज तो केवल डोलभाके का ही दिन है। हम सब तो इनके आगे उजबक लगेंगे।" सब एक साथ उठकर जीप में लद गए। एक दिल हजार चाहने वाले की तरह एक जीप थी और बैठने वाले लगभग एक दर्जन। सब किसी न किसी तरह एडजस्ट हुए और जीप का सेल्फ दबते ही वह गुर्राने लगी जैसे कुत्ते का कान उमेट दिया गया हो।

शहर से बाहर होते ही फिर ठहाके गूंजने लगे। जीप के आगे धरती का आँचल फहरा रहा था और विंध्या की श्रेणियां चारों ओर फैली हुई थीं।

बैंक मैनेजर मिश्रीलाल बता रहे थे कि ये दशहरा मैदान है। यहाँ हर वर्ष दशहरे के दिन रावण का पुतला जलाया जाता है। लेकिन अब धीरे-धीरे यह प्रथा जीवनहीन होती जा रही है।

शर्मा जी ने जिज्ञासा की—ऐसा क्यों हो रहा है?

मिश्रीलाल ऐसे बता रहे थे जैसे अपने पुरखों का पुराण बांच रहे हों। उन्होंने फौरन जवाब दिया....

अब गांव से चन्दा ही नहीं होता है। पहले तो रियासत थी सो वहीं से यह प्रबन्ध होता था। अब लोगों को इस शगल में कोई दिलचस्पी नहीं रही है।

"अच्छा है लोग अब पैसा फूँकते नहीं हैं। पैसे से और भी कई काम हैं करने के लिए।" एक साथी ने जवाब दिया।

और मैं सोच रहा था कि रावण की लंका जल गयी, राम चन्द्र भगवान ने रावण को मार डाला और राज किया, अब उनका राज्य भी नहीं रहा। अब तो एक एटम बम बढ़ती हुई जापानी फौजों का हौसला पस्त करा सकता है। एक हायड्रोजन

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

बम समुची दुनिया को आतंकित कर सकता है, चांद पर झंडे उड़ाये जा रहे हैं और हमारे लोग अभी भी रावण का पुतला जलाने में व्यस्त हैं। इस परम्परा का निर्वाह करने के लिए अपना पैसा लुटाते हैं? आखिर ऐसा क्यों? धर्म और परम्पराओं के नाम पर कब तक सीधे सादे लोगों को उत्तेजना का जाम पिलाया जाता रहेगा?

तभी जीप ने एक हिचकोला खाया और सब लोग उछल पड़े। भोरासकर सुना रहे थे अपने महकमे का अनुभव। वे यह समझाना चाहते थे कि कैसे सहकारिता आन्दोलन ही आजके युग की संजीवनी बूटी है कि जिसे खाकर मेघनाद की शक्ति खाकर भी लक्ष्मण में नयी चेतना आ सकती है।

"भाई हम तो कहते हैं आपका यह विभाग रामराज्य के पूर्व भी था। देखिये न, जब रामचन्द्र जी को लंका पहुँचने के लिए समुद्र पार करना था तो यही विभाग काम आया। देखते देखते समूची बानर सेना एक जुट हो गयी और समुद्र पर पुल बंध गया। यह चमत्कार आपके ही विभाग का था। मेरी इस बात पर फिर गहरा कहकहा लगा। लेकिन तभी डोलझाके ने जोर से वताया कि उस समय जनकार्य विभाग यानी पी० डब्ल्यू० डी० का अस्तित्व था तभी तो पुल बनाने का आइडिया आया।

"हां वह तो था ही लेकिन सभी काम डिपार्टमैंटली ही करवाये जाते थे। उस समय कांटेक्टर्स नहीं थे।

कहकहों पर कहकहे लग रहे थे और जीप अपनी गति से आगे वढ़ रही थी। रास्ते से थोड़ा हटकर खेत पसरे हुये थे और उनकी सौंधी सौंधी महक तन-मन को सहला रही थी। खेत हले जा चुके थे और बोनी करने के लिए एक अच्छी बरखा

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

की बाट जोही जा रही थी। आजू बाजू हली हुई धरती काली और पथरीली जैसे मुस्कुरा मुस्कुरा कर हमें निहार रही थी अरे, शहरी बाबू लोग आज इधर किधर ?

मुझे धरती का यह रूप बहुत भला लगा। लड़की के विवाह की भी तैयारियां हो गयी हों और बस दुल्हे की प्रतीक्षा है। दुल्हा मिला ब्याह रचा और लड़की को बिदा कर दी वैसे ही बस पहला मेह बरसा और धरती में बीज डाले !

सामने के टीले पर कुछ लोग खड़े थे। भोरासकर ने बताया कि बस वहीं हमें पहुँचना है। वही मुसाउरा हैं—वे लोग हमारी ही प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मुझे पहले ही क्षण कुछ निराशा हुयी। अरे यह कहाँ आ फँसे ! न कोई मकान न कोई टपरा ही। न ही कोई बाग बागीचा कि जहां बैठ सुस्ताया जाये। न पपीते के आकर्षक अमृत कलश जैसे फल और न आम की गहरी छाया। बस धरती और धरती, बसाहट का कोई नाम नहीं। मन में खीझ समा गयी।

सोसायटी के मेनेजर श्री मोहिते ने हम सब का स्वागत किया। मुझे बाद में बताया गया कि ये मैनेजर अपने जमाने के अच्छे खाते पहनते सरदार वंश के रहे हैं लेकिन अब तो विगत वैभव की लाश पर इन्होंने अपने सद्व्यवहार और परिश्रम का नया आधार तैयार कर लिया है। ये खुद अच्छे काश्तकार होने के साथ एक अच्छे जिन्दा दिल इन्सान हैं।

इस टिगड्डे पर जहां हम सब, अब खड़े हुये थे एक छोटी-सी काटेज बनी हुयी थी और उसमें चटाइयाँ बिछी हुई थीं। शायद फार्म मैनेजर अपने यहाँ से टी सेट ले आये थे और अब इसी काटेज में हम लोगों के लिए चाय तैयार थी। गोकि सफ़र कोई विशेष लम्बा नहीं था और उससे कोई थकान आने वाली भी

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

नहीं थी. फिर भी एकाएक जो निराशा मन में पर फड़फड़ा रही थी। उसे चाय की गर्म गर्म भाप ने अवश्य झुलसा दिया। चाय के साथ बिस्कुट भी थे जो दर असल स्वाद में उम्दा थे। ये बिस्कुट शायद ग्रामोद्योग स्तर पर तैयार किये हुए थे क्योंकि कुछ इसी प्रकार के बिस्कुट मैं पहले भी चख चुका था।

चाय पीते-पीते ही मैंने मोहिते से जानकारी चाही कि मूसापुरा नाम का कोई ग्राम है भी या नहीं कि केवल इस फाम का नाम मूसापुरा है। और कि इसके असली जोतने वाले कहाँ हैं ?

एक साथ इतने अफसरों और विभिन्न पेशों के लोगों को देख शायद मैनेजर अत्यधिक उत्साह से भर गये थे सो वे एक सपाटे में सब कुछ बताने लगे। मैं इस मशीनी विवरण से कुछ चौंक गया और कन्नी सी काटते हुए फोटोग्राफर मित्र कानूनगो से कहा—चलो, जरा दो—चार चित्र ही ले लिए जायें।

सूरज की किरणें तिरछी हो कर धरती पर फिसल रही थीं और काफी हिस्सा इस पड़त भूमि का हला जा चुका था। केमरे के दायरे में एक आदिवासी आ गया जो घुटनों घुटनों तक धोती पहने हुए था और जिसके खुले वक्षपर काले काले केश लहरा रहे थे। अपने साथ वह दो बैलों की रस्सी थामे चला आ रहा था कि मैंने जोर से उसे आवाज लगा कर कहा–ठहरो ! और कानूनगो का केमरा इतनी देर में क्लिक कर गया। मेरे मुंह पर मुस्कुराहट नाच उठी और कानूनगो का चेहरा संतोष की पवित्र भावना से भर गया।

"क्या नाम है तुम्हारा ?" मैंने फोटो वाले कृषक से पूछा।

"भेराजी !" उसने दोनों हाथ जोड़ मुझे नमस्कार करते हुए कहा।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

भेराजी ! क्या करते हो तुम भेराजी ? मैंने फिर पूछा ?

भेराजी ने जवाब दिया—मेम्बर हैं बाबा। हम यहाँ की सोसायटी के पंच हैं। हमीं तो भूमि को जोतते हैं।

उसके उत्तर से मुझे कुछ बल मिला। मेरी निराशा को एक ठोकर लगी।

फिर मैं पूछता रहा और भेराजी मुझे तरह तरह से बताता रहा। अच्छाइयां भी और कमियां भी। जैसे वह मुझे आईना दिखा रहा था कि जिसमें हर चीज ज्यों की त्यों परिलक्षित हो रही थीं।

आईने में शक्लें उभर रहीं थीं। वे चिराग गांव मूसापुरा, जहां न कोई घर था और न कोई वासी। शायद किसी जमाने में यहां भी चिराग जलते हों, यहां भी चूल्हे से उठा हुआ धुंआ खपरेलों में रेंगता हो और बच्चों की किलकारियां और चीखें यहां भी गूँजती हों। शायद है कभी इस भूमि पर भी गीतों के स्वर मुखरित हुए हों और मिट्टी पर बैल मस्ता मस्ता कर चले हों परन्तु अब सब कुछ अंधेरा और आईने में जैसे काला पर्दा प्रतिच्छावित हो उठा हो चिराग नहीं, रोशनी नही और आजू बाजू फैले आदिवासी धरती मां के आदि बेटे जिनके पास जमीन नहीं और खाने को, पेट भरने को अन्न नहीं और ये बंजर भूमि, हजारों बीघा बंजर धरती फैली हुई है जिसमें बड़ी बड़ी घास उगी हुई है, बड़े बड़े पत्थर बिखरे हुए हैं धतुरे और खेजड़े के दरख्त भूमि को चूसे जा रहे हैं चूसे जा रहे हैं।

और तब किसी आदिवासी महिला की ओढ़नी की सी लाली फैलने लगती है और ये ही आदिवासी बोलने लग

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

जाते हैं और सरकारी अफसर के आगे जाकर जमीन मांगते हैं।

जमीन चाहिये बाबा। खेती करेंगे।

परन्तु जमीन कहां है ? कहां खेती करोगे ?

और तब यह बंजर धरती आईने में उभर आती है सब हंसते हैं परन्तु धरती के बेटे नहीं हंसते हैं। वे अटल हैं अपनी भूमि लेकर रहेंगे ! और कोई एक हजार बीघा भूमि के कई एक खंड आकर जम जाते हैं और मां-भूमि के छब्बीस बेटे कमर कसकर आगे आते हैं। सब भूमि हीन आदिवासी खेत मजूर ? लपलपाती उमंगों लिये चेहरे आते हैं कि फिर आईने में जसे बैलों की दौड़ शुरू हो जाती है, खेतों में हल चलते हैं।

और भेराजी मुझे बता रहा था बाबा हम छब्बीस लोगों ने मिल कर यह सोसायटी बनायी थी और दो ही वर्ष में पांच सौ बींघा परत भूमि को जोत बोली है। मूँग और ज्वार और मूँग फली और मक्का और तूअर की अच्छी फसल ली है और अब हम यहां शहतूत के पौधे लगा रहे हैं ताकि रेशम के कीड़े पाल सकें।

सोसायटी के पन्च लोग अब यहीं अपनी झोपड़ियां बना रहे हैं-सरकार की ओर से भी उन्हें मदद मिल रही है और एक कुंआ बन कर तैयार हो गया है.....

मैं इन सब बातों से भर गया और मन जाने कहां-कहां दौड़ने लगा। सोवियत रूस में की जाने वाली सामूहिक कृषि के बारे में जो भी पढ़ा था, जो भी चित्र देखे थे वे आंखों में तिरने लगे और ख्याल आने लगा-हमारे इन भूमिहीनों की यह जद्दोजहद, यह संघर्ष किस बात में कम है। ये

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

भी तो भविष्य का ताना-बाना उसी मुस्तैदी और उसी सुन्दरता से बुन रहे हैं जैसे....

तभी दूसरे साथियों के ठहाके सुन पड़े और फार्म मैनेजर आंकड़े बताते हुए कहते सुनाई पड़े....साहब ये २६ भूमिहीन आदिवासी हैं। उनकी अंशपूंजी ११०१ रुपये की है और शासन ने तीन हजार की अंशपूंजी तथा साढ़े चार हजार का ऋण स्वीकृत किया है। सोसायटी के लिये घर बनाने हेतु नौ हजार की सहायता मंजूर की है और......

और मैं बीच में ही बोला-अब बस करो भाई मोहिते बाबू। अब जरा घूमा जाये। दूसरे साथी समझे कि मैं शायद बोर हो गया हूं सो दूसरा टापिक छिड़ गया।

हम लोग काफी देर फार्म पर घूमते रहे। फिर सबने मिल कर पराठे और आलू की सब्जी और आम का अचार और बटाटे भात और बाजारू मिठाईयां जो पत्तल पर सजा-सजा कर रखी थीं जी भरा और खूब खाया।

लौटती बार मैंने केवल इतना कहा....भई खूब है! हमारे किसान किस बात में पीछे हैं। खूब हैं।

और मेरी आंखो में बराबर नये नये रंग आ रहे थे.. नये नये सपने तिर रहे थे....एक नया उभरता हुआ गांव, आत्मविश्वासी आदिवासी, हंसती लहराती जवान जवान फसलें, बच्चों की चिल्लौरी हंसी और लुगाईयों की अल्हड़ता जैसे समूचा जीवन एक धानी लुगड़े में सिमट कर सबको सम्मोहित कर रहा हो और मेरी आंखो के आगे एक दीपक जैसा धीरे-धीरे प्रज्वलित हो उटा....।

———

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

अंजन की महक : पसीना नहायी इन्सानियत

पहाड़ी नाले की तरह छोटी सी याने संकरी सी सड़क सीधी चली गई थी और दोनों ओर वृक्ष, अन्जन के वृक्ष प्रहरी से खड़े थे। इन वृक्षों से लगकर खेत फैले हुए थे। छोटे-छोटे खण्ड और बीच-बीच में थोड़ा सा छोड़ा गया रास्ता। यही रास्ता दो खेतों के बीच सीमाएं निर्धारित करता था। अपनी सीमा से कभी बाहर किसी का हल चला, तो बस तीर चल जाते और लहु वह जाता और यहां के जन-जीवन में एक और सामान्य घटना घट जाती और बात आई-गई हो जाती।

बाग की गुफाएं कहते हैं, चित्रकारी के नजरिये से बहुत ही बेहतरीन हैं। कहा तो यह भी जाता है कि यहां के पेंटिंग्ज

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

में अजन्ता से भी ज्यादा परफेक्शन है और इसीलिए यहां पर प्रायः पर्यटकों का आना जाना लगा रहता है । मैं धार में रहते हुए भी इन्हें देखने के सुख से कहीं वंचित न रह जाऊँ और किसी पर्यटक के आगे इस कारण खीसें निपोर कर हंसना न पड़े, इसलिये आज अचानक ही स्टेट रोड़वेज की बस में सवार हो गया। वैसे मन में एक बात और थी कि वाग की गुफाओं को देखने के बाद बारह मील आगे बढ़कर कवि-मित्र राम—विलास शर्मा से भो कुक्षी में भेटकर लूंगा और इस प्रकार उसे अपने अहसान से लाद दूंगा कि देख, तेरे लिए कितनी दूरसे आया हूं ।

बाग गांव से निकलते ही घाट शुरू हो जाता है जो यों काफी छोटा और कम खतरनाक है । परन्तु फिर भी उसके मोड़ और चढ़ाई कम कष्टप्रद नहीं हैं. विशेषकर बस ड्रायव्हर के लिए। इस घाट में सेन्दूरी मिट्टी भरी पड़ी है और चूंकि कोई न कोई बस या कार आती जाती रहती है इसलिए धूल कभी भी सतह पर न रहकर घाट में सिर धुनती फिरती है और हर बस से पूछती है— बता तेरा नाम.... तेरा ठिकाना। और बस उपेक्षा से गुर्राती हुई निकल जाती है,जैसे नयी पीढ़ी का युवक टोनेकार—मंत्रकार की उपेक्षा कर मुंह फेर लेता है।

मैंने ड्रायव्हर से पूछा—

'क्यों ड्रायव्हर साहब, आप तो बस, सड़क पर छोड़ देंगे-वहां से रास्ता कैसा है गुफाओं तक ?"

ड्रायव्हर को इस सम्बोधन से जैसे सुख मिला । एक पढ़ा-लिखा, अच्छे भले कपड़े पहनने वाला व्यक्ति उसे 'ड्रायव्हर साब कह रहा है । वह मुस्कुराया, जैसे कहना चातता हो कि

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

इसमें पूछने की क्या बात हैं बाबूजी, बस तो 'केञ्ज' तक न जाती है। परन्तु उसने दिलासा सी दी।

"आपको बाबू साब अच्छा रास्ता मिलेगा और आप दो तीन बजे तक वापस फाटे पर आ जायेंगे तो आपको कुन्ती वाली गाड़ी भी मिल जायेगी।"

मुझे मन ही मन बड़ा क्रोध आया स्वयं पर कि अकेला ही क्यों चला आया। यदि किसी साथी को साथ लिया होता, तो अच्छी खासी कंपनी रहती और यूं अकेले भटकना भी न पड़ता पर अब तो केवल अपने पर झुंझलाया ही जा सकता था।

और जब बस 'केञ्ज' के संकेत स्थान पर सांस भरकर ठहर गई तो मैं सांस छोड़कर उतर गया। एक ओर कपड़े का झोला लटक रहा था, जिसमें एक तौलिया, एक कुर्ता, एक पजामा और एक बिस्कुट का डिब्बा पड़ा था और एक दूसरे कंधे पर केमरा लटक रहा था। मैंने एक बार मुड़कर देखा-- गाड़ी स्टार्ट हो चुकी थी और ड्रायव्हर और कंडक्टर मुझे शुभ यात्रा करने के लिए अपनी मुस्कराहट द्वारा 'विश' कर रहे थे। यात्री जैसे मेरे इस साहसिक कार्य के प्रति नतमस्तक थे।

मैंने एक बार सीमा-चिन्ह पर नजर डाली-गुफाएं तीन मील। और चल पड़ा। रास्ते में एक लंगोटी लगाये भील लड़का ढोर चरा रहा था, जिसकी वय बारह बरस से ज्यादा नहीं थी। मैंने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया और बढ़ता रहा। मन में सोचता रहा, स्वगत भाषण करता रहा कि ये गुफाएं यहां इस वियावान जंगल में बनाने में क्या तुक रही होगी? क्यों बौद्ध भिक्षुओं ने इन पहाड़ियों को तराशा और क्यों यहां अपना डेरा डाला?

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

अब सामने मुझे पहाड़ी में कुछ दरवाजे नजर आने लगे थे। मैं गुफाओं के नजदीक आ गया था। गाइड वहाँ था नहीं-- चौकीदार रूपसिंह गैसबत्ती जला कर मेरे साथ हो लिया। मेरे सामने एक पहाड़ का टुकड़ा खड़ा था जो परतों में बना हुआ था! शायद इसी कारण यह पहाड़ चुना गया कि तराशने में अधिक शक्ति खर्च न हो। कोई दो-चार गुफाएं ही ठीक हालत में मिलीं। शेष ध्वस्त हो चुकी थीं या ध्वस्त होने की अवस्था के निकट थीं। चौकीदार रूपसिंह जैसे गाइड बनकर मुझे बता रहा था-यह स्तूप है, यह बुद्ध भगवान की मूर्ति है--देखिए मूर्ति के चेहरे पर कितना तेज है। यह बुद्ध का शिष्य है। इन चित्रों को देखिए- इन पैनल्स को देखिये। यह पोर्टिको था पहले, इधर भिक्षु लोग भजन करते थे-इधर प्रसाद पाते थे...

और मैं देख रहा था कि हर जगह, हर दीवार और हर पेंटिंग पर किन्हीं मनहूस हाथों ने अपने नाम तराश दिए थे और ये नाम कई थे। इन नामों ने जैसे मूल कृतियों का गला घोंट कर उन्हें मार डाला था। चमगादड़ों की बीट से नाक सड़ता सा लगा और सीलन को देख देख कंप-कंपी सी उठने लगी। इन सबके बावजूद गुफाओं के कौशल, कारीगरी और चित्रकारी ने मुझे अभिभूत कर लिया। और गुफाओं के बाहर लगे पेंटिंग्ज की प्रतिकृतियां देखीं तो मैं अवाक रह गया। कैसी भव्यता, पूर्णता, शुचिता!

गुफाओं के नीचे बाघनी नदी धीरे—धीरे बह रही थी। यही नदी पांच महीने गुफाओं का रास्ता रोक लेती है और गुफाओं तक पहुंचने की कोशिश करती रहती है।

मैंने चौकीदार को एक अठन्नी दी और नीचे उतर आया। कुछ देर बाघनी के शीतल जल में पांव रखे खड़ा रहा।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

चौकीदार ने बत्ती बुझा दी थी और अब मुझे पानी को पूछ रहा था। मैंने सेव परमल और बिस्कुट निकाल लिए। रूपसिंह को एक कागज पर रख दे दिया। उसने बिना किसी प्रतिवाद के उसे स्वीकार कर लिया और मेरे लिए एक लोटा गिलास पानी से भर, ले आया। मैं बहुत मजे में नाश्ता कर रहा था। और रूपसिंह टूरिस्टों के मजे बखान कर रहा था। फिर उसे न जाने क्या सूझी कि अपनी सायकल निकाल लाया और बोला–"चलिये साब, आपको फाटे तक छोड़ दूंगा। मुझे भी गांव तक जाना है।

मैंने महसूस किया कि केवल दो मीठी बात से ही इस निम्न मध्यम वर्ग के इन्सान की समूची सहानुभूति मेरे लिए उमड़ आयी है। कितना निश्छल प्रेम था उसका। कहीं भला ऐसा प्रेम शहरों में मिलेगा।

चढ़ाई पर उतरते और समतल पर सायकल दौड़ाते हम दोनों डबल सवारी फाटे तक आ गये। मैंने उसके कंधे पर हाथ रखा और उसे शहरी सभ्यता से सने धन्यवाद की चाशनी चखाने ही वाला था कि मेरी गैरत ने मुझे ललकारा और मैं इस क्षुद्र प्रदर्शन से विमुख हो गया। फिर वह सड़क पर सायकल चलाते हुए ओझल हो गया। और मैं हेमिंग्वे का ओल्डमैन एण्ड द सी पढने लगा कि बस आ गयी।

फिर वही लम्बी उखड़ी उखड़ी सी सड़क और रपट और पुलियाएँ और पथरीली भूमि। और कुल्ली!

बस स्टैण्ड पर ढेर से बच्चे बस में घुस आये।

"बाबूजी सामान? बिस्तर है क्या उपर? कहां चलना है?" हल्के हल्के मासूम चेहरे। सबके सब यात्रियों की ओर एक अपेक्षामयी दृष्टि डाल रहे थे, जैसे वे उनसे दान चाहते हों। ऐसी

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

करूणा और दीनता उनकी आंखों से टपक रही थी कि मुझे लगा कि क्यों नहीं, मैं बिस्तर या सूटकेस लेकर आया औरक्यूं यूं ही छड़ा चला आया। कुछ लड़के बस के ऊपर चढ गये थे और बिस्तर छू छूकर यात्रियों को पिघला रहे थे।

बस स्टैण्ड पर ही पता चला कि कवि मित्र रामबिलास नर्मदा स्नान को गये हैं और रात्रि तक यहां पहुँचने की आशा है। कमबख्त को रास्ते भर याद करता आ रहा था, और तो और उसकी कविता की लकीरें चाकलेट की तरह मुँह में उल्टा पुल्टा कर रहा था और आप हैं कि यहीं से नदारद। बड़ी कोफ्त हुई. मगर किया भी क्या जा सकता है। अब रात्रि को आयेंगे और भुज भर भेटेंगे और कह कहा लगाकर पड़ोस में सोने वाले बच्चों की नींद हराम करेंगे।

तब यों कहिए कि मेरे भाग्य से बी० डी० ओ० आ पहुँचे। मुझे देखकर खिल गए। फिर कुछ शिकायतभरे स्वर में बोले-क्यों साहब ऐसी भी क्या नाराजी—कभी तो दीदार दिया करें! मैंने जबाब में कहा कि मैं आपको दीदार देने ही बदली चीर कर प्रकट हुआ हूं।

"अच्छा तब तो ठीक है, अब आप हमारे साथ चलिए। आज आपको कुछ दिखा दें।

क्या कोई अचम्भे का बच्चा है या किसी आदिवासी के घर पांच बच्चे एक साथ जन्मे हैं या महुए का वृक्ष अंजन वृक्ष में परिवर्तित हो गया?"

"नहीं नहीं.. यह सब कुछ नहीं। हम आपको एक गांव में ले जाना चाहते हैं। वहां के लोगों से बातचीत कर आप खुश होंगे। आपको कुछ मटेरियल भी मिलेगा।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

"और आप से बात कर कौन कमबख्त नाखुश है। चलिए" फिर से नाश्ता पानी किया गया और मैंने बिना किसी तकल्लुफ के चाय की तीन प्यालियां पी डाली और जब सिगरेट जलाकर एक जोर से कश लिया, तब ऐसा लगा कि अभी चेतना है बदन में। मन में रामबिलास का कांफीडेंशल रोल एक बार फिर सेन्सर किया और जीप में लद गए।

गाड़ी मे ब्लाक का पूरा फेराफर्नेलिया मौजूद था। सभी शाखाओं के विस्तार अधिकारी उनके साथ थे। जैसे बी. डी. ओ. एक बरगद का वृक्ष हो, और विस्तार अधिकारी उसकी शाखाएं, उपशाखाएं, जो दूर दूर तक फैलकर छाया करती हों। रास्ते भर घोड़ा डाक्टर और शिक्षा योजक पुरी एक दूसरे को शब्द बाण से घायल करते रहे, बिना ताजीरात हिन्द की किसी दफा के शिकार बने।

बी. डी. ओ. बता रहे थे कि इस नीरस जिन्दगी में और है ही क्या। ये कहकहे ही तो हम लोगों को जीवित रखते हैं। इन्हीं भील भिलालों के साथ हमारे साथी नाचते हैं, और काम करते है ! कभी जब बहुत ज्यादा ऊब जाते हैं तो दो चार दिन की छुट्टी लेकर बाहर घूम आते हैं।

वैसे बी. डी. ओ. स्वयं हिन्दी के ज्ञाता थे। मराठी भाषी होने के साथ वे हिन्दी में साहित्य रत्न की उपाधि लिये हुए थे और मन बहलाने को कविता भी करते थे। शायद हिन्दी की नयी कविता ने उन्हें छुआ भी नहीं था और इसलिये इधर पत्रों में प्रकाशित कविताओं को पढ़कर भी वे न पढ़ पाने का पोज़ करते थे।

तीन मील चलने पर ही आली गांव आ गया था सड़क से गांव तक कोई दो फर्लांग की एप्रोच रोड गांववालों ने बना ली

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

थी। अच्छी खासी पक्की सड़क और उसके आजू बाजू नन्हें-नन्हें पौधे ट्री-गार्डस मे बन्द, आने जानेवालों से आशीष मांग रहे थे।

गांव में मादल बज रही थी। मादल के स्वर में न जाने कैसा जादू होता है कि पांव अपने आप संगत पर उठने गिरने लग जाते हैं। मैंने कई बार मादल बजते सुना है और हर बार मेरे पांव ऐसी ही हरकत करना शुरू कर देते हैं। मेरे रक्त में एक उबाल-सा आने लगता है। और मैं बेचैन हो जाता हूं।

"आज गांव में क्या बात है ? मादल कैसे बज रही है ? मैंने प्रश्न किया।

अब हम एक अच्छे से, पक्के कुएं के पास आ, ठहर गये थे। पूरी ने बताया कि मादल तो गांव में आये दिन बजती रहती है। जब भी इन्हें जरा विश्राम मिला, तो ये मादल लेकर बैठ जाते हैं। ग्राम का उपसरपंच आ गया था और उसके साथ ही दस-बीस लोग और आ गये थे।

बी. डी. ओ. ने मेरा परिचय करवाया—"ये आपका गांव देखने आये हैं। फिर अखबारों में लेख लिखेंगे—फोटू छपवायेंगे। इन्हें बताओ।" उपसरपंच ने मुझे पुनः हाथ जोड़े और एक भोलीभाली हंसी हंस लिया और बोला—

"अरे बाबूजी हमने क्या किया ? करने वाले तो ये बी. डी. ओ. साहब हैं। इन्होंने सब कुछ किया और उसने बी. डी. ओ. की ओर हाथ जोड़ दिये। अतिथि के समक्ष अपनी प्रशंसा सुन, बी. डी. ओ. को सुख मिला। उन्होंने दूने जोश में कहा, "अरे नहीं हमारा तो यह काम ह' है। आपकी मदद बिगर क्या हो पाता यहां ? इन्हें सब बताओ।"

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

उप सरपंच जरा झिझकते से लहजे में बोला "देखिये यह कुआ है, यह गांव वालों ने बनाया है।"

मैंने देखा वह कुआ ही था। कोई स्कूल-घर नहीं था। यह भी कोई बताने की चीज थी।

"अब यहां साफ पानी मिलता है। और भी ऐसे दो कुए हैं, जहाँ पानी साफ मिलता है।

"पांच साल पहले गाँव नारु से सड़ा करता था। छोटे-छोटे बच्चों से लेकर बड़े-बुढ़े तक के पांवों में नारु निकलते। बच्चे हाय-हाय कर रोते, जवान तड़फते, और बुड्ढे ठुड्ढे सिसकते। गांव का कच्चा कुआ था और गाँव का सारा बेकार पानी बहकर इसी कुए में जमा होता। पानी सड़ा करता, दुर्गन्ध में सना रहता और इसी में कई जानें चली गयी। बाबूजी जब बादल उठते थे और नारु पाँव में हिलने डुलने लगता तो रोगी की पीड़ा देखी नहीं जाती थी। रोगी जल के बाहर मीन जैसा तड़फता था। बच्चे निठल्ले घूमा करते। खेतों के लिये पानी नहीं था। धरती को पानी न मिलेगा, तो वह कहाँ से फसल को कस पहुँचायेगा। साहूकार का पैसा हर किसी के गले में फंदा बना पड़ा था जो जाने कब कस जाता और प्राण ले लेता।

उप सरपंच कुछ देर तक रुका और फिर बोला—"अभी तो सभी चीज वरत आपके आगे है। आप स्वयं देख लें। यह कुआ है—खेत सींचने को हर खेत मे कुआ है, गाँव मे पाठशाला और प्रौढ़शाला है। हम लोगों की सोसायटी है, जहाँ से हमें कर्ज मिलता है। हमारा अन्न भंडार है, वहाँ हम अपना बीजवारा सुरक्षित रखते हैं....बुनकरों की एक सोसायटी है ...।"

हम सब लोग अब गाँव मे चल रहे थे। उपसरपंच काफी उत्साह से भर गया था। सामने एक छोटे से उद्यान मे बच्चे

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

फिसल पट्टी पर फिसल रहे थे और रेडियो पर मंडियों के भाव सुनाए जा रहे थे, जिसे कुछ कृषक बैठे गंभीरता से सुन रहे थे।

बी. डी. ओ. ने बताया कि उप सरपंच यहीं की प्रौढ़शाला में पढ़े है। इस बात का उपसरपंच ने हाथ जोड़कर समर्थन किया।

गाँव पर साँझ उतर आई थी और चरागाह से पशु लौट रहे थे। हम सब गाँव के मनोरंजन केन्द्र में पहुँच गये थे, जहाँ घोड़ा डाक्टर तबले बजाने का प्रदर्शन करने लगे।

"आप तो पशुओं के आगे तबला ही बजा दिया करें—उनका रोग भाग जाया करेगा।" मैंने तबले सुनते हुए कहा और घोड़ा डाक्टर और जोरो से तीन ताला बजाने लगे। मनोरंजन केन्द्र आली का एक आकर्षण है। इसी चौक मे जब मादल बजने लगती है और घुंघरु झनकने लगते हैं और नृत्य होने लगते हैं, तो सारा गाँव यहाँ एकत्रित हो जाता है और रात रात भर यह क्रम चलता है, जैसे जिन्दगी घुंघरु बाँधकर नाचने लग जाती है।

उप सरपंच ने टूटी—साबित सी प्यालियों मे चाय पीने की मनुहार की, आखिर चाय यहां भी है और मीठी अच्छी दूधिया चाय हम लोगों ने पी ली। हमारे चाय पान से सरपंच के चेहरे पर संतोष छा गया।

फिर घोड़ा डाक्टर की जगह गांव की भजन मंडली जम गयी और फिर कोई मस्ताना ढोल बजाने लगा और रात के गहन सन्नाटे में नृत्य और गीतों के सुर खिलखिल करने लगे। जाने कब रात गहरी हो गई।

लौटती बार जीप की तेज रोशनी रास्तों पर फैल रही थी और मेरे मन में छाये बाग की गुफा के चित्र की जगह आली का

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

लैण्डस्केप पेंट होता जा रहा था। बाग का सौन्दर्य अपनी जगह है परन्तु आली का सौन्दर्य बहुजन सुखाय बहुजन हिताय है। और मुझे याद आती हैं भाखड़ा नंगल की और मेरे आगे नये युग का इन्सान खड़ा हो जाता है। मुझे याद आती है भिलाई ईस्पात कारखाने और चम्बल बांध की और मुझे इन्सानियत पसीने में नहायी, भीगी-भीगी मुस्कुराती सी लगती है और फिर मैं आली की याद करता हूं और जैसे मेहनत फूल बन कर महकने लगती है। नये निजाम के ये झंडे उड़ते ही रहेंगे· कहीं छोटे, कहीं बड़े, परन्तु एक चाह लिए।

और मैं सोचने लगा कि कुल्ली पहुँचकर रामविलास की कविता सुनूँ या उसकी कविता में इन उड़ते हुए झंडों का रंग भर दूं··! जीवन के उद्दाम यौवन से सराबोर कर दूँ!

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

थिरकती मादल की धुन पर अचेतन मन

दूसरे दिन मुझे रामविलास और बी०डी० ओ० आदि मित्रों ने रोक लिया। रामविलास तो पिछले दिन साथ न रह पाने के कारण प्रायश्चित सा कर रहा था।

आज ठहरो पार्टनर ? आज कुन्ती में ही एंजाय करेंगे। परन्तु बी०डी०ओ० मुझे रोककर गेटा पार्टी का नृत्य दिखाना चाहते थे। संयोग से गेटा पार्टी का नृत्य आज के लिए पहले से ही नियत किया जा चुका था और उसका मेरे आने से किसी भी प्रकार का संबंध नहीं था। मैंने भी गेटा पार्टी के नृत्य कौशल के बारे मे काफी सुन रखा था और फिर यह भी बताया गया था कि इस पार्टी के स्त्री पुरुषों के फीचर्स असाधारण रूप

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

से उम्दा हैं । मैं देखने से क्यों वंचित रहूं-मैंने स्वीकार कर लिया।

"ठीक है, अज तुम्हारी कविताएं ही सुनेंगे। मैंने राम विलास को कुरेदा मगर वह तो अपनी शर्महया को डीजल आयल बनाकर बस के इंजीन में फूँक चुका था उस पर इसका क्या असर होता : झट बोला, रही पार्टनर ! मैंने इधर दो चार नई चीजें झुकाई हैं।

यह झुकाने का जुमला उसका अपना है। बात बात में वह इसका उपयोग करेगा यह मैं जानता हूं। चाय पीनी हो तो झट कहेगा बंधु एक प्याली चाय झुकाई जाये। इस जुमले को वह साहित्य से लगाकर बात तक के साथ काम में लाता है और पुरजोर लाता है। मैंने भी कहा अच्छा पार्टनर, तुम कविता झुकाना और मैं नींद झुकाऊँगा। और इस पर वह बच्चे चौंकाने वाले कहकहे लगा उठा।

दोपहर को खाना खाकर मैं और रामविलास काफी देर तक बातचीत करते रहे। मैं उससे पूछ रहा था कि हमारे गांवों के जीवन में ये जो परिवर्तन आ रहा है यह क्या हमारे लिखने वाले साथियों को नजर नहीं आता है ! ये लोग क्यों इससे अछूते हैं ? क्या जरा भी प्रेरणा उन्हें इस से नहीं मिलती है ?

नहीं पार्टनर ऐसी बात नहीं है। हमारे लेखक बंधु अपनी रोटी रोजी की लड़ाई ही पूरी नहीं कर पाये हैं। उनके उदर खाली हैं और इसलिये ये सब देख उनका मन वितृष्णा से भर आता है।

तो खाली पेट फिर वे कैसे इश्किया रचनाएं कर लेते हैं, मैंने कहा। सवाल तो यह है कि लेखक लिखता है तो फिर

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

उसे बदलते हुए रंग क्यों नहीं दीखते। आज हमारी सोसायटी या हमारे ग्रामों का फेशिया बदल रहा है। और हमारे लेखक उसी सामन्त युगीन ग्राम समाज का वर्णन कर रहे हैं? आखिर ऐसा क्यों?

मैं तो कहता हूं सरकार को चाहिये कि वह लेखकों को इन परिवर्तन स्थलों पर ले जाये, उन्हें कुछ दिन यहां रखे और फिर वे आप ही इन सब को अपना लेंगे? रामविलास ने सुझाव दिया।

खैर सुझाव देने वाले और अमल करने वालों में भारी अन्तर जो है, सो हम यहां चुप मार गए। फिर रामविलास ने अपनी नई कविताएं भुकायी। मैं सुनता रहा। यों लगता था कि वह जैसे इस अंचल के जनजीवन में पूरी तरह भीग गया है। यहां की धरती की रंगत, बिखरे हुए पत्थरों की नौक, पके आम का मिठास और महुओं का नशा, लोग लुगाइयों के तन बदन की महक जैसे सब कुछ उसने अपने में भर लिया है।

पर दौर तब बन्द हुआ जब बी डी०ओ० के वहां से चाय का बुलावा आया। दर असल हम लोगों को यह ख्याल भी नहीं था कि चार बज चुके हैं। हम जल्दी से उठे और कपड़े पहन कर साथ हो लिये।

बी०डी०ओ० महोदय ने अच्छी खासी दावत जुटाई थी। उनके सभी ग्राम सेवक और विस्तार अधिकारी यहां पहले से ही मौजूद थे। मैंने जाते ही माफी मांगी—क्षमा कीजिये। हम लोगों को समय का जरा भी ध्यान न रहा। वास्तव में रामविलासजी की कविताओं में व्यस्त थे।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

"तो हम लोग क्यों वंचित रहें ? हो जाय साब कुछ ।"एक व्यक्ति बोल उठा ! मुझे भी और रामविलास को भी यह फरमायश अच्छी नहीं लगी । रामविलास ने मुझे क्रुद्ध दृष्टि से देखा । मैं उस पीड़ा को समझ गया जो जता रही थी कि हमें इतना सस्ता न बनाओ कि हर जगह हमें झौंक दिया। मैंने जैसे प्रस्ताव को लंगड़ा करते हुए कहा पहले चाय तो पिओ ? फिर दूसरी बातें होंगी ।

फिर ग्राम सेवकों का परिचय होने लगा । प्रदेश के दूर दूर के हिस्से से आये हुए लोग । कोई भिंड का निवासी था तो कोई गवालियर का ! किसी के मा बाप बालाघाट में थे तो किसी की शादी छतरपुर में हुई थी । सैकड़ों और सैकड़ों मील चलकर आये ये सब लोग ? यह ठीक है कि ये सब के सब नौकरी करने आये थे, परन्तु फिर भी इस अनजान और पहाड़ी भू भाग में फैल तो गये । अपरिचित लोगों को अपना रहे हैं, उन्हें अपना मीत बना रहे हैं । इन्हें भी तो कभी अपने घरों की, अपने मां बाप की, पत्नी और बच्चों को याद सताती ही होगी और तब ये क्या देखते होंगे ? क्या विन्ध्याचल और सतपुड़ा की गिरि श्रृंखलाएं इन्हें धीरज बंधा पाती होंगी या नर्मदा का पानी बहते बहते इनके लिए कभी रुक कर पूछता होगा—मेरे बच्चे तुझे क्या तकलीफ है ? ये लोग इसी तरह खटते रहेंगे । अपने विश्वासों की नीव में ये चुपचाप अपना खून और पसीना गिराते रहेंगे ।

एक ग्राम सेवक घोड़ा डाक्टर को तलाश रहा था । डाक्टर साहब, हमारे गांव के पटेल की मुर्गी ने अण्डे देना बन्द कर दिया है और मुर्गे ने बांग भरना बन्द कर दिया है । पटेल

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

कहता था कि घोड़ा डाक्टर को बुलाना पड़ेगा। कभी आइयेगा इधर!

दूसरा डंक सा मारता है— मुर्गी कहां से अण्डे देगी। बेचारी जानती है कि उसके अण्डे यों ही लोगों के पेट में चले जाते हैं-फिर वह अपने पेट से ही क्यों निकाले?

और तब बालाघाट वाला ग्राम सेवक समाज शिक्षा योजक पूरी को छिलता है—

'पूरी साहब, आपने जिस प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र का निरीक्षण किया उसका आगे का हाल आपको मालूम है न?' अब पूरी क्या बताए, उसने कभी किसी प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र का निरीक्षण किया ही नहीं सो आगे का विवरण क्या जाने? परन्तु चूंकि ग्राम सेवक सबके सामने उसके निरीक्षण करने का तथ्य रख रहा है तो पूरी इस आई वाह—वाही से क्यों कर मुकरे? उसने ओठ फैलाकर पूछा—

हां...... हां उसका क्या हुआ भाई?

और बालाघाट से आया ग्राम सेवक सुनाता है कि, एक बार पूरी जी हमारे यहां प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र का निरीक्षण करने आये और सीधे केन्द्र पर पहुंचे। शायद घर पर रामचरित मानस में रामविवाह का प्रसंग पढ़कर आये थे कि बस वहां जाते ही पूछा एक प्रौढ़ से जो संयोग से ग्राम पंचायत का पंच भी था। इन्होंने पूछा अच्छा बताओ जनक का धनुष किसने तोड़ा? अब कक्षा में सन्नाटा! सब प्रौढ़ एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। स्वयं मास्टरजी भी इधर उधर देखने लगे! उन्हें जहां तक मालूम था उनमें से किसी ने उक्त धनुष नहीं तोड़ा था। फिर उनसे यह प्रश्न क्यों किया जा रहा था? पूरीजी ने

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

फिर अपना प्रश्न दुहराया— बताइये, किसने जनक का धनुष तोड़ा ?

इस पर एक प्रौढ़ ने हाथ जोड़कर कहा— महाराज, हमें कुछ नहीं मालूम ! हमने तो धनुष नहीं तोड़ा ?

और सभी प्रौढ़ों ने इन्कार में माथा हिला दिया। फिर पूरीजी मास्टरजी की ओर घूमे और कहा–आप बताइये ? लेकिन मास्टरजी इन्हें क्या दाद देते, झट कह दिया— सर मैंने तो नहीं तोड़ा !

इस पर पूरीजी ने अपने निरीक्षण नोट में लिखा कि केन्द्र में जरा भी ईमानदारी नहीं है और मास्टर भी इस ओर तवज्जुह नहीं देते हैं। बस ये तो नोट लिख गये लेकिन वह नोट आगे बढ़ता रहा। वहां से केन्द्राध्यक्ष के पास और वहां से सहायक निरीक्षक के पास होता हुआ निरीक्षक के पास गया। सुना है अब जो नया बजट आया है, उसमें केन्द्र के टूटे धनुष की जगह नया धनुष खरीदने के लिये प्रावधान किया गया है और मास्टर का तबादला कर दिया गया है तथा आने वाले के लिए हिदायत दी गई है कि वह प्रौढ़ों को अक्षर ज्ञान के साथ ही सत्य बोलना भी सिखाये और धनुष की बराबर देखभाल की जाये !

लोग जमकर हंसे और खूब हंसे। ग्राम सेवक की सूझ पर सब रीझ गये थे। पूरी हतप्रभ हो गया।

बी. डी. ओ. मुझे कह रहे थे— व्यास साहब, हमारी तो यही जिन्दगी है !

मुझे यह निश्छलता बहुत भाई ! किसी प्रकार ये लोग अपने ही मूल्य पर हंसी—ठट्ठा कर लेते हैं और सुख पा लेते

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हैं। फिर मैंने इन सब साथियों की तस्वीरें खींची और सब उठ गये।

ब्लाक के सामने के प्रांगण में किरणों का ताप उतरने लगा! ग्राम सेवक लोग रात्रि के नृत्य की व्यवस्था में लग गये और हम लोग बाहर कुर्सियां डाल बैठ गये।

एक वृद्ध से व्यक्ति ने आकर हम सबको नमस्कार किया। बी.डी.ओ. उससे कुछ देर बातें करते रहे और फिर हमारी ओर मुखातिब हो बताया— यह चन्दरसिंह है। ढोलिया ग्राम का पंच है पटेल है। मेरे सामने एक छः फुट का वृद्ध खड़ा था दोनों हाथ जोड़े। वह सलीके से धोती पहने हुए था और उस पर लाल साफा बाँधे था। उसके कान में सोने की बालियां थीं जो उसकी सम्पन्नता की उद्‌बोधक थी, । बात का वह भी लाला था। उसकी आंखें छोटी छोटी सी मगर लाल सुर्ख थीं और ६० बरस से अधिक हो जाने पर भी उसमें कड़क थी, एक धज थी।

'आज इनकी भी पार्टी आ रही है। बी. डी. ओ. ने कहा और फिर चन्दरसिंह की ओर आंख के कोये फिराकर बोले—आज देखना है तुम्हारी रंगत! हाँ!

वृद्ध कुछ देर खड़ा रहा और फिर चला गया। बी. डी. ओ. कहने लगे— यही चन्दरसिंह किसी जमाने का कुख्यात डाकू था। यह सारा क्षेत्र इसके नाम से कांपता था। न जाने इसने कितनी बार बन्दूकें चलाईं और कितने ही घरों और गांवों को इसने लूटा! भीलड़े धूजते थे इसके नाम से और बनिये बेपारी कांपते थे इसका नाम सुनकर और आज यही चन्दरसिंह चोंदरसिंह बाबा— के नाम से मान पाता है। नई व्यवस्था को यह भी धूपदान कर उसे गमका रहा है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

मुझे चन्दरसिंह की छोटी-छोटी सुर्ख आंखों का ध्यान आया और मैंने महसूस किया कि यह व्यक्ति जल्लाद हो सकता है ! अब नहीं है सो खैर है वरन जब ये खून की प्यासी आंखें सिकुड़कर किसी को देखती होंगी तो उसका तो प्राण ही निकल जाता होगा ।

' पार्टनर तुम्हारे लिये केरेक्टर ! झुकाओ इस चन्दरसिंह पर कुछ !" रामविलास बोला ।

मैंने कहा-नई कविता चोंदरसिंह की तरह है । प्रगतिवाद के धरातल से नई जमीन पर आ गयी है परन्तु कंटेंट में वही प्रगतिवादी बोध है । रामविलास के पहले बी०डी०ओ० इस पर हँसने लगे ।

हम लोग अभी खाना खा ही रहे थे कि मादल का स्वर अंगड़ाइयां लेने लगा ।

ता....ता....धिन्ना ।

बाहर आदिवासी टोलियां झूम रही थीं । औरतें और आदमी सभी उन्चास पवन में लहराते रूंखड़े की तरह लगा रहे थे। तरह तरह के फेंटे और फेंटों में मोरपंखों की सजावट कुछ अजीवसी मोहक मोहक लग रही थी । पुरुषों के हाथों में भी कड़े थे और पीठपर तरकस बंधे थे । किसी के हाथ में धनुष था तो किसी के हाथ में तलवार । कोई लकड़ी का टुकड़ा थामे थामे लहरा रहा था । सभी ने अपनी कमर कस रखी थी ।

जवान जवान भील लड़कियां, जिनकी भौंहों में कुछ इतना खिंचाव कि कोई भी नजर उनके आगे टिक नहीं सकती थी ! उन्होंने अपनी ओढ़नियों के सिरे केशों में बांध लिये थे । ललाट पर

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy
और गालों पर और ठोडी पर बु·दी बुन्दी गुदी हुई थी । गले में हसली और कोडियों की मालाएँ। हाथों में कड़े और फूलों के गजरे। लाल घघरिया। और उस पर पीली मगजी। पीली ओढ़नियां और उस पर लाल किनारी।

मेरी प्यासी आखें पथरा गई! क्या सारा का सारा रूप और सौंदर्य और यौवन इसी आंचल में बिखरा हुआ है। रामबिलास भी अपलक पी रहा था आंखों से।

और तब एक साथ कई ढोल बजने लगे... कई मादल बजने लगे। बांसुरी का स्वर चलते चलते साथ हो लिया और टांडा के आदिवासी मैदान में कूद पड़े! दल का नेता रणछोड़ सिंह अपनी धज में बिफर रहा था। वह मोटड़े का साफा बांधे हुए था और हाथ में नंगी तलवार लिए था। किसी ने पीछे से बताया कि रणछोड़सिंह किसी धार्मिक सम्प्रदाय की ओर से चुनाव भी लड़ चुका है, लेकिन उसमें हार गया था। मैंने कहा–धर्म से पेट थोड़े ही भरता है। उसके लिए अच्छा किसान होना जरूरी है। रणछोड़सिंह ठीक समय पर सम्हल गया, यह अच्छा ही हुआ।

आगे-आगे रणछोड़सिंह और उसके पीछे एक औरत, एक आदमी एक कतार में बढ़ने लगे और घूम कर एक वृत्त बना लिया। वृत्त के बीच में ढोलिया ढोल पर किमची नचा रहा था। औरतों ने पुरूषों की बगल में हाथ ड़ाल लिए और पुरूषों ने उनके हाथ थाम लिये। नृत्य चल रहा था और वातावरण में तेजी आ रही थी। फिर नृत्य एक लटट्रू में बदल गया और लट्टू घूमता नजर आने लगा। बस, कभी–कभी ओढ़नियों के रंग चांदनी में चमक कर मिट जाते। लट्टू घूमता रहा··· घूमता

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy
रहा कि तभी चांदरसिंह बाबा की ढोलिया पार्टी मैदान में कूद पड़ी। रणछोड़सिंह का वृत पुनः एक कतार बन पीछे हट गया। ढोलिया पार्टी में औरतें एक ओर से बढ़ीं और पुरूष दूसरी ओर से। मादल का स्वर हांफ हांफकर भाग रहा था। और आमने सामने की टुकडियां दूर जा–जाकर पास आ रही थीं। इस क्रम में तेजी आते ही लगने लगा कि जैसे जवान फसलें लहरा रही हैं, भूम रही हैं, हवा के हर झोंके के साथ आगे जाती है और हर झोंके के साथ पीछे जाती है। कब ये टुकड़ियां आगे बढ़ती और कब पीछे हटती, कुछ भान न रहता। आंखे थम गई थी और जैसे वे स्वयं हवा में लहरा रही थी। और तब लहराती फसलों में जैसे ज्वार और मकई के भुट्टे खिलखिला उठे हों वैसे ही भीलनियों के और भीलों के हाथ उठे–उनके कड़े टकराये और अलग हो गये। फिर पंक्तियां आगे बढ़ी, हाथ उठे कड़े टकराये और फसलों में भुट्टे खिलखिला उठे।

मैं हैरान था। यह कैसा नृत्य कौशल! कहां है इसका मुकाबला! अंग्रेजी बाजे पर थिरकने वाले कदम और लिपी स्टिकी मुस्कुराहटें और यह उद्याम वेग! तभी एक बार फसल फिर से लहराई और ज्वार और मकई के भुट्टे खिलखिलायें और गेटा के लोग मैदान में टूट पड़े। गेटावालों का श्रृंगार और उनके नख शिख वाकई लाजवाब थे। ये नई फसल की आग वानी कर रहे थे। थाली का मद्धम स्वर मादल की आवाज पर सुलग रहा था और घुंघरू झनझनानें लगे। हर पांव गिरने के साथ हाथों की तालियां बज उठती और इधर घुंघरू छम्म कर जाते। औरतें कभी मोर बन जाती और नाचने लग जाती तो कभी पुरूष कटती फसल का समां बांध देते। फिर औरतें फसल बन कर लहराने लगतीं और पुरूषों की टुकड़िया ऊँकडू

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy
ऊँकड़ू आगे बढ़ती फसल काटती और आगे बढती फिर फसल काटने वाले हाथ मिल जाते हैं और वातावरण में तालियां बज उठती, घुंघरू छम्म कर उठते।

रात काफी गहरी हो गई थी। और गर्द चारों ओर छा गई थी। वलाक के ग्राम सेवक भी कहीं कही नाच में साथ हो लिये थे. और अब थक कर बैठ गये थे। तभी बी०डी०ओ० उठे और ताल टूट गई। छम्म छम्म करती औरतें अलग हो गई और पुरूष खड़े खड़े हंसने लगे। मादल अब धीमे धीमे बज रही थी।

फिर सभी को इनाम दिये गये और हमें उठना पड़ा। मगर नाचने वाली पार्टियां रात भर नाचती रही। इन्हें दो चार घन्टे के नाच से चैन न मिला। उल्टे प्यास उदीप्त हो उठी और रातभर सब भील नाचते रहे।

सुबह जब वी० डी० ओ० रामविलास और अन्य मित्रों से विदा लें रोड़वेज की बस में जा बैठा तो मैं किसी तरह अपना आभार प्रकट कर नही सका। केवल चलती बस से हाथ हिला दिया, पर मुझे धार आने तक बस में केवल एक दृश्य दिखता रहा, और वह रात्रि का नृत्य लोकनत्य आदिवासी नृत्य कि जब मैदान में लट्टू घूमने लगता है कि जब मैदान में फसलें लहरानें लगती हैं और ज्वार और मकई के भुट्टे खिल खिलाने लगते है कि जब मैदान में लहराती फसल की कटाई होने लगती है और मोर नाचने लगते है! मेरे कानों में बरा बर मादल और घूंघरू और बंसी के स्वर गूंजते रहे गूंजते रहें और बस घाटों और मैदानों को पार करती गयी... पार करती गयी।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

कड़ाही में खौलती मांदल

झाबुआ का नाम आते ही मेरे मन में, मेरी आंखों के आगे अभावों से लड़ने वाले भील भीलालों, नायकड़ों और पटलियों का एक बहुत विस्तृत चित्र खींच जाता है, एक बड़ा कैनवस आ जाता है। तरह तरह के रंग उभर आते हैं, लोग उभर आते हैं, पहाड़ी भूमि और ढ़लानों पर छितराये खेतों के टुकड़े उभर आते हैं मक्का और ज्वार बाजरा की छोटी-छोटी, और विकसित फसलें उभर आती है, नंग-धड़ंग, सूखे हाथ पैर और बड़े पेट वाले बच्चों की मासूमियत उभर आती है, वहां की छोटी-छोटी झोपड़ियां और छोटी-छोटी पहाड़ियां उभर आती हैं और फिर इस चित्र में महुआ की गंध आने लगती है, खोदों में उबलने वाली भट्ठी से कच्ची शराब की गंध आने लगती है और फिर कुकड़ा

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

कुकड़ी के स्वर और ढोल-मादल के स्वर सुन पड़ते हैं। और इस बड़े सारे कैनवस में फिर एक साहूकार का चेहरा फैलने लगता है और देखते ही देखते सारे कैनवस पर वही चेहरा छा जाता है। जैसे जापानी गुडडे चाबी देने पर ही हाथ पैर मटकाते हैं ठीक जैसे ही साहूकार इस समाज में चाबी भरता है और ये सब लोग हिलने डुलने लगते हैं।

मैं झाबुआ जा रहा हूं बीडीं सी की बैठक में भाग लेने। सोचता जा रहा हूं कि इस अञ्चल में कितना परिवर्तन हुआ होगा। आज से आठ वर्ष पहले की स्थितियां क्या अब भी होंगी। मैं शायद आठ या नौ वर्ष पहले इस भूभाग में आया था, एक प्रेस पार्टी के साथ, जब यह अंचल अकाल के पंजों में जकड़ा हुआ था। जहां भी जाते अकाल की परछाईयां छाई हुए दिखतीं। चेहरे सहमें हुए। खिंचे हुए। शायद उदयगढ या इसके आस पास का कोई गांव रहा होगा, जहां एक भील परिवार मुर्दा बेल का गोश्त खा रहा था। उफ !

यह याद ही मन में जाने कैसी उबकाई ले आती है। सोचता हूं अब तो हालात में बहुत परिवर्तन हो चुके होंगे। हुए होंगे, यही तो देखना है। और मैं बीड़ी-सी-ब्लाक डेव्हलपमेंट कमेटी की बेठक में भाग लेने जा रहा हूं।

लेकिन आज झाबुआ नहीं पहुँच सका। रास्ते में, दस मील इधर ही रामा में ठहरना पड़ा। रामा विकास खण्ड के नवयुवक उत्साहीं विकास अधिकारी श्री यादव में कुछ इस प्रकार का मोहक व्यक्तित्व है कि वह किसी को भी अपनी ओर बरबस खींच लेता है। दुबले-पतले, छर-हरे, सांवला सा सदैव मुस्कराता हुआ चेहरा, निरभिमान। साहित्य में रुचि और

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

अपने कार्य के प्रति मोह. आस्था, निष्ठा। जब वे रामा में मिले तो मुझे बस से उतरना ही पड़ा। वे मुझे बड़वे का प्रदर्शन बताना चाहते थे और मैं इस लोभ का संवरण न कर सका।

रामा में आज हाट का दिन था। नमक और तेल की, मिर्ची और मकई की, रंगे हुए लुगड़े और कांचरियों की दुकानें सड़क के दोनों किनारे लगी हुई थी। मिर्ची के, कड़ुए तेल में तले हुए भजिए परातों में धुप खा रहे थे और भील भीलाले और पटलिये यहां वहां घूम रहे थे। श्री यादव बतला रहे थे कि असली हाट यहां लगा है. लेकिन बोहरे और बनिये एक एक मील दूर तक अपनी दरी बिछाये, तराजू लिये बेठे हैं और यहां आने वाले व्यक्ति का माल वहीं धरा लेते हैं ! मुझे लगा जैसे बोहरे और बनिये व्यूह बंदी किये हुए हैं कि कोई भी भोला भाला चेहरा इस ओर आया कि उसे धर दबाया। कम दामों पर माल धरा लेंगे और पैसे के बदले चार पैसे का नमक और छः पैसे की मिर्ची बांध देंगे और कुप्पी में कड़ुआ तेल भर देंगे। न कोई पूछने वाला न कोई टोंकने वाला।

लगता है, बनियों और बोहरों ने मिलकर यहां एक बहुत कड़ा कडाहा तैयार कर रखा है जिसमें शनैः शनैः आदिवासियों का खून खिंचता जाता है, कडाई में इकट्ठा होता जाता है और इस खून से ये लोग अधिक मोटे, अधिक सम्पन्न होते जाते हैं।

गांव का एक पढा लिखा सा लड़का बताता है कि विकास खण्ड खुल जाने से बहुत लाभ है, परन्तु जो नियम बने हुए हैं उनसे गरीब किसान को फायदा नहीं मिल पाता है। यदि कुछ लाभ मिलता भी है तो ये बनिये बोहरे उससे काम निकाल लेते, हैं।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

मैंने अपनी आंखों में प्रश्न चिन्ह बनाकर पूछा- 'यह कैसे हो सकता है ?

लड़का विवेचना करता है। अब देखिए, यहां के जितने बनिये बोहरे व्यापारी हैं, वे सवान प्रथा से हम लोगों के साथ लेन देन करते हैं। हमें बीजवारे की जरुरत हुई तो ये ही लोग हमें अनाज देते हैं और जब हमारी फसल पकती है तो हमसे सवाया वसूल करते हैं। हम किसी और को अपनी फसल बेच भी नहीं पाते। यदि किसी और को बेच दी तो ये लोग हमारा बहिष्कार शुरु कर देते हैं। हमें मजबूर होकर इन्हीं व्यापारियों की मर्जी के अनुसार फसल बेचनी पड़ती है।

अब यदि कोई आदिवासी बिकास खण्ड से तकावी मांगता है, तो नियमानुसार उसे वह नहीं मिल सकती। तकावी लगान की दस गुना तक ही मिल सकती है। ज्यादातर लोग ऐसे हैं जो पांच या दस बीस रुपया लगान देते हैं। उन्हें दो सौ रुपया मिल सकता है। लेकिन दो सौ रुपये में क्या कुआ बनेगा, क्या पम्प लगेगा। इससे लाभ बड़े किसानों को ही मिल सकता है। वैसे हमारे बी. डी. ओ. साहब जमानतें आदि लेकर छोटे किसानों की तकावी दिलवाने का प्रबंध करते हैं. लेकिन हर जगह तो ऐसा नहीं होता होगा।

फिर यदि सरकारी बीज लेने का मौका आया तो ये ही व्यापारी किसान को पैसा दे देते है और जो बीज का नाज आता है, वह उस किसान के नाम चोपड़े में चढ़ा लेते है। फसल के वक्त व्यापारी रुपया नहीं, सवाया अनाज ही वसूल करेगा। बताइये अब कैसे किसान को लाभ होगा ? लड़का

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

कहता जा रहा था—और इन गरीब लोगों को रोज नोन तेल की जरूरत पड़ती है। इन साहूकारों से सम्बन्ध न रखे तो कैसे जिये ?

मैं इस ग्रामीण लड़के का विवेचन सुन, सकते में आ गया। परिस्थिति का सच्चा एवं ठीक कितना ठीक चित्रण यह लड़का कर रहा था, परन्तु इसमें कहीं भी व्यर्थ की शिकायत या आलोचना की वृत्ति नजर नहीं आती है। वह केवल चाहता है कि कुछ ऐसा परिवर्तन हो कि अदने से अदने किसान को भी लाभ पहुँचे और उसे भी सुविधाओं की नई किरण छू ले।

यादव कह रहे थे—इन सबका उत्तर है, सेवा सहकारी समिति। जब तक ऐसी समितियां नहीं बनेगी तब तक यह क्रम ज्यादा कम रूप में चलता रहेगा। ये समितियाँ आदिवासियों के समूचे जीवन को नये वस्त्र पहना देंगी। उन्हें कर्ज देगी, बीज देगी, हल-बक्खर देगी, नोन तेल लकड़ी देगी, उनकी फसल बेचेगी, अच्छे दाम उपलब्ध करायेगी और साथ ही उत्पादन बढ़ाने में योग देगी। आदिवासी स्वयं इनका प्रबन्ध करेंगे। समस्या का यही हल हो सकता है।

अब हम लोग बड़वे की बड़वागिरी देखने बढ़ गये। आम के पेड़ के नीचे आग जल रही थी और छोटी सी ढोलकी बज रही थी और एक आदिवासी वहां पसीने में तर बतर हो धुन रहा था। उसके बदन पर एक मैली सी धोती, एक बंडी और सिर नंगा था। लम्बे लम्बे केश मुँह पर बिखरे हुए थे और कच्ची शराब की गंध वातावरण में तैर रही थी।

भील-भीलनियां बड़वे को घेरे हुए बैठे थे और बड़वा सिर को चकरी के समान घुमा रहा था। वह बार-बार कुछ बोलता

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

जाता था और एकत्रित समुदाय सुन-सुन कर उसका अर्थ लगा रहा था। सुख और दुःख की बातें, खुशी और विषाद की बातें फसल की बात, फसल अच्छी होने की, फसल खराब होने की बातें, किसी के घर चोरी होने की बातें, चोर का पता देने वाली बातें सब कुछ बड़वे के मुख से झर रहा था और लोग बड़वे को भेंट करते जा रहे थे चढ़ावा चढा रहे थे।

यादव बतला रहे थे कि आदिवासी समाज में बड़वे का बहुत असर होता है। बड़वा जो भी कहता है वह बात मानी जाती है। यदि बड़वा कह दें कि गांव में कुआ नहीं खुदेगा तो सब उसे मान लेंगे। कोई इस काम में हाथ नहीं बटायेगा—काम नहीं होने देंगे। बड़वा गांव में एक फोर्स है—एक ताकत है।

इन रूढियों से, परम्पराओं से लड़ने में कितना समय लगेगा, कितनी शक्ति व्यय होगी? एक हुक्म से तो सब कुछ नहीं बदलने का। हुक्म नहीं विस्तार। केवल विस्तार प्रणाली से ही सब कुछ बदलना होगा और इसके लिए धैर्य की जरूरत होगी एक लम्बे धैर्य की, साहस की।

सामने की नन्हीं-नन्हीं पहाड़ियों से खेत उतरते हुए दिख रहे थे। पहाडियों की ढलवान से खेत शुरू हो छोटे-छोटे मैदान में फैले हुए थे। इन ढलवानों पर थोड़ी बहुत जो भी मिट्टी थी उससे ललचाकर इन आदिवासियों ने उस भूमि को हल लिया था और वहीं अपनी किस्मत बो दी थी। पत्थर पर फूल खिलाना और किसे कहते हैं, मैंने मन में सोचा। कितना संघर्ष, कितनी जद्दोजहद ये लोग करते हैं जिन्दा रहने के लिए और फिर उस संघर्ष का फल क्या मिलता है-साहूकारों के पंजे, जो इनके

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

गले के इर्द-गिर्द कसते चले जाते है और ये असहाय हो, उन पंजों की गिरफ्त में छटपटाते रहते हैं।

रास्ते में एक खूबसुरत सा स्कूल देखा श्री यादव ने बताया कि यह शाला भवन केवल छः दिन में बना है। मात्र छः दिन की अवधि में ग्रामीणों ने इसे बनाकर पूर्ण कर लिया हैं।

भवन की स्थिति, उसकी बनावट और सुन्दरता ने मुझे मोह लिया। छोटी सी पहाड़ी के ढलवान पर बना यह भवन ग्रामीणों की क्षमता का प्रतीक था। सूरज की नन्हीं किरणे इस पर फिसल पट्टी जैसी फिसलती, अधेड़ किरणे इन पर छेड़खानियां बरसाती और बूढी किरणे इन्हें सहलाती। अंधेरी रातों का अन्धकार इसे प्यार करता और चांदनी रातों की कांति इस पर क्रीड़ा करती। इसी स्कूल पर नन्ही-नन्ही कोंपले बडी होंगी, बच्चे कोमल कोमल हाथों में स्लेटे थामेंगे, अ आ इ लिखेंगे, अपनी तोतली जबान में दोहरायेंगे और आगे बढेंगे। यही पीढ़ी इस पीढ़ी इस अंचल को छाया देगी। नयी मशाल की वाहक यही पीढी तो बनेगी।

मैं ने पछा—छः दिन में तो कमाल कर दिया। कैसे हो गया यह सब?

यादव ने बताया कि हमारे किसानों को उनके बल की याद करानी है। एक युग था, जब लंका पहुँचने के लिये समुद्र पार करना था। सीता मैया का समाचार लाना था। उस समय वानर गुरूओं ने हनुमान को भुला हुआ बल याद दिलाया और जैसे ही हनुमान ने अपने बल को याद किया वे समुद्र लांघ गये और रावण की सोने की लंका फूककर लौट आये। फिर दूसरा युग आया। कुरूक्षेत्र के मैदान में अर्जुन ने शस्त्र डाल दिये। तब

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को उसका बल याद कराया। अपना बृहद स्वरूप उसे बताया और अर्जुन ने गांडीव उठा लिया। और अब इस युग में हम लोगों को, किसानों को उनका भूला बल याद दिलाना है। उन्हें बताना है कि उनके अन्दर कितनी क्षमता, शक्ति और साहस छिपा हुआ है। वे अपने विवेक की आंखें खोलें, अपना बल याद करें और अपने को संवारे। बस यहां हमने यही किया और यह स्कूल आपने सामने है।

मुझे यह रूप अच्छा लगा। मैं कहा—"इस रूपक को आप लिख डालिये। बहुत अच्छी बात कही आपने।" यादव हंस लिए और दूसरी बात करने लगे।

हाट उठ गया था। दोपहर बाद हाट पूरी तरह बिखर जाता है। आदिवासी सांझ के झुरपुटें से पहले अपनी झोपड़ी तक पहुँच जाना पसन्द करते हैं और इसलिये दोपहर होते ही सब लोग चल पड़ते है। इक कतार से सब चलते है। स्त्री और पुरूष। सौदा सुलफ लिये तेज तेज कदम बढाते, वे मीलों का सफर घंटों में तय कर लेते हैं।

हम लोग जीप में बैठे झाबुआ की ओर बढ रहे थे। वही पथरीला टेड़ा तिरछा रास्ता। पलाश और अंजन और खेजड़े के वृक्षों के झुण्ड। इनके बीच सड़क सहमती सहमती सी बढ़ती हुई कि कही कोई जंगली जानवर न आ धमके। लोग सड़क के आजूबाजू तेज तेज कदम बढाते हुए जा रहे थे। मैं सोचता जा रहा था कि आदिवास समाज के इस सोते हुए इन्सान की नींद जब खुलेगी और यह जागेगा और अंगडाईयां लेकर अपनी शक्ति एकत्रित करेगा तब क्या होगा? ये बनिये बोहरे, ये

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

साहूकार–ये समाज की जोकें कहां रहेगी । ये सबके सब सूखे पत्तों की तरह मसल जायेंगे। लेकिन तब नये इन्सान का बल ध्वंस की क्रिया में नहीं, निर्माण की प्रक्रिया में ही समर्पित होगा और तब इस पथरीली भूमि पर फूल खिल उठेंगे, खुशबू वादियों में महक उठेगी और जीवन–शिशु नवीन किलकारी भर डग भरने लगेगा ।

———

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

इंद्र धनुषी रंगों में बंजर भूमि

झाबुआ में एक दिन ठहर कर, फिर आगे बढता हूं। झाबुआ जिले का सीमान्त प्रदेश का सीमान्त है। इसकी सीमाएं एक ओर गुजरात से मिलती है तो दूसरी ओर राजस्थान से। झाबुआ से थांदला की ओर बढते जाएं और थांदला पार करने पर कुशलगढ़ की सीमा भी आ जाती है। ये सीमाएं एक पहाड़ी पर जाकर मिलती है-अलग होती है। दूसरी ओर झाबुआ ब्लाक के गहरे में उतरे तो रानापुर से आगे कच्चे ऊबड़-खाबड़ रास्ते में जाकर मांडली नाथू में पहुँचने पर गुजरात की सीमा कुछ ही दूर खड़ी पुकारती सी लगती है। वही धरती, वही हवा, वैसे ही पशु और पक्षी, वैसे ही आदिवासी। लेकिन सीमाएं सब कुछ अलग कर देती हैं-एक पृथकत्व का बोध कराती है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

झाबुआ में ईसाइयों का अच्छा खासा केंद्र है। मेघनगर और थांदला में उनके केन्द्र है, जोबट कुट्टीवाड़ा और आमखूंट में उनके केन्द्र है। उनके केन्द्र हैं यानी चर्च है, अस्पताल है, स्कूल है और बहुत बड़ी रकम उनके खर्च के लिये है। यह रकम देश के बाहर, समुद्र पार से आती है और यह रकम जीप बन कर इस भूमि पर दौड़ती है, वह रकम पादरियों की मुस्कराहट बन भील को रिझाती है, यह रकम मक्की और जुवार के दाने बन आदिवासियों के पेट सहलाती हैं यह रकम स्कूल की घंटी बन टनटनाती है, बच्चों के बिस्कुट बन नन्हें मुन्नों को लुभाती है और यह रकन ईसाइयत की चाशनी बन पेट में उतर जाती है और फिर आदिवासी भील भोले भाले आदिवासियों के अभाव और मजबूरियां घूटने टेक देते हैं और यह रकम क्रास चिन्ह बनकर उनके गले में झूलने लगती है। शायद मिशनरी समझते हैं कि अभी जो ये धर्म मानते है वह गलत है इसलिये तो ईसाइयत के प्रचार के लिये इतनी मोटी-मोटी रकम आती है। लेकिन ईसाइमत का प्रचार भी तो अर्थ की भूमि पर हो रहा है। इन लोगों की आर्थिक कमजोरियों का लाभ उठाया जा रहा है। भूखों को अन्न दिया जाता है, रोगियों को गोलियां दी जाती हैं और साथ में ईसाइयत दी जाती है। यह सशर्त सेवा का कैसा अजीब और विकृत ताना बाना है जो लगातार आदिवासियों को अपने वृत में समाविष्ठ करता चला जा रहा है।

फिर पादरियों का हाथ फैलता जाता है। आदिवासी धर्म परिवर्तन करते हैं और ईसाई हो जाते हैं। फिर गांव की समाज व्यवस्था में पादरी की आवाज चलती है। वह जो कहेगा वही होगा, और हमारे गांव की परिवर्तन की प्रक्रिया इन विदेशी पादरियों की इच्छा पर अवलम्बित रहेगी। कैसी विडम्बना है

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

यह । बनिये, बोहरे व्यापारी अपने मुनाफे के लिये इन लोगों को चूसते हैं । ये चर्च क्या कोई दूसरा हित साधन है ? इनका हित विदेशी धर्म के फैलाव से बंधा है । उस धर्म का निर्णायक रूप लेने के साथ बंधा है ।

लेकिन इन चर्चों के साथ ही हमारे अपने-अपने छोटे-छोटे केन्द्र भी स्थित है । आदिवासियों के कल्याण केन्द्र । आदिवासियों के छात्रावास, स्कूल, औषधालय, पशु पालन केन्द्र, बाल क्रीडांगन लघु उद्योग केन्द्र, ये छोटे हैं क्योंकि इनके लिये खर्च होने वाला पैसा किसी विदेश से नहीं आता है । अपनी ही जेब का पैसा लगता है इसलिये जेब की स्थिति के अनुसार ही पैसा खर्च होता है । वह पैसा जरूर रंग लायेगा क्योंकि वह जनता का अपना पसीना है, जनता की अपनी मेहनत का अर्जन है ।

झाबुआ से आगे बढता हूं । ढेकल के घाट पर जीप कभी दांयी ओर मुड़ जाती है तो कभी राईट अबाउट टर्न हो जाती है । घाट के नीचे पंचायत घर, सहकारी समिति का दफ्तर और स्कूल है । यहां के आदिवासी सूरसिंह का इस अन्चल में मान है । वे नये परिवर्तन को समझते है-उन्हें पूरा करने को जीभर प्रयास करते हैं ।

मकई के खेत फैले हुये द्रष्टिगोचर होते है और घाट पर ही कपास और ताड़ और महुए के दरख्त । जीप अब घाट उतर रही है और ठंडी हवा बदन को छूकर ताजगी पदेर रहे हैं ।

राणापुर से दांये मुड़ते ही कच्चा रास्ता शुरु हो जाता है । झाबुआ के नौ जवान अधिकारी कुलकर्णी स्टीयरिंग पर हैं और बात-बात पर ठहाके लग जाते है । उन्होंने झाबुआ में बताया था,

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy
कि कैसे मांडली नाथू में एक सिंचाई योजना ने गांव वालों का दृष्टिकोण बदल डाला। मैं उसे देखने को उद्यत हो गया। वे तो थे ही। और अब हम सब कच्चे रास्ते से जरा भी भयभीत हुये बिना बढ़ रहे हैं। मांडली नाथू की ओर- -सीमान्त की ओर - - जिसका सीमान्त प्रदेश का सीमान्त है और नये राज्य के सीमा चिन्ह की ओर।

श्री कुलकर्णी बोल रहे थे - - बन्धु, यहां के लोग जब तक प्रत्यक्ष लाभ नहीं देख लेते तब तक किसी भी कार्यक्रम को अपनाते नहीं है।

"सो तो है, यह बात हर जगह लागू होती है।" मैंने कहा।

अब देखिये मांडली नाथू गांव को। यहां जो भामयी है यह ऐसे ही बहता रहा। इन लोगों ने कभी उससे खेत नहीं सींचे गर्मियों में नाला सूख जाता है और ढोर प्यासे रहते है लेकिन जब हमने इस नाले पर बांध बांधवाने का प्रस्ताव रखा तो किसी ने समर्थन नहीं किया।

एक किसान व्यंग से बोला—अरे बी० डी० ओ० साब नाला इतनी ऊँचाई को भूमि तक कैसे पहुँचेगा? हम लोग बरसों से तो इसे यों ही देख रहे है। आपको इसका कुछ अनुभव नहीं हैं।

दूसरा बोला—क्यों सरकारी पैसा नाले में डालते हो महाराज। पैसा फालतू है तो हमें कर्ज दे दो।

सबने खूब मजाक उड़ाई। एक बार तो मैं भी नर्वस सा होने लगा परन्तु हमारे ओव्हरसियर ने राय दी कि बांध उपयोगी होगा। मुझे लगा कि भामयी नाला इस गांव के जड़ संस्कारों

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

का प्रतीक है यदि इसमें उपयोगिता पैदा की जा सके तो ये संस्कार बांध के पानी से धुल जायेंगे। हम लोग डटे रहे। हमारे विस्तार अधिकारी से यहां कैम्प करवाये गये और धीरे-धीरे १०४ फीट लम्बा और ६ फीट ऊँचा बांध बंध गया।

बी०डी०ओ कहते जा रहे थे—फिर बांध स्थल पर एक जेक वेल, एक इन्जिन कक्ष बना, दस हार्स पावर के दो पम्प लगे लेकिन गांव वाले इस तमाशे को देखते रहे—बच्चे आते और तालियां पीटते, औरते आती और खिलखिलाती तथा मर्द ताने कशी करते।

"फिर हमने एक दिन सारे गांव को बुलाया और इन्जिन चालू कर दिया। जैसे गांव वालों के आगे पृथ्वी घूम गयी हो वे देखते रहे इन्जन फट—फट—फट..फट कर चलता जा रहा था और दोनों पम्प तेजी से नाले का पानी खेतों में उलीच रहे थे। बच्चे मगन हो नाच उठे और पम्प के पानी में बैठ नहाने लगे, एक दूसरे को छीटने लगे। औरतें आंखे फाड़ फाड़ कर देखती रहीं और मर्द सकते में आ गये। यह क्या? यह कैसे हुआ?

और भूजा बोला—मैं प्याज के खेत को सींचने के लिए मोटर चलाता था और सात दिन में सींच पाता था और यह पम्प तो एक घंटे में ही काम कर गया।

गोपू ने कहा—बाकी पानी का क्या होगा? किसी ने पूछा—हमारे खेतों का क्या होगा? और हमने बताया कि एक लम्बी नहर बनाओ उससे छोटी छोटी नालियां काट, पानी अपने खेत तक ले आओ।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

मैंने पूछा— अब क्या स्थिति है ? अब तो सभी खेत में अच्छी फसल होती होंगी ।

कुलकर्णी उत्साह में भरे थे, बोले—अब तो सबके खेत तक छोटी छोटी नहरें गयी है। मांडली नाथू में एक उन्नत कृषि सहकारी संस्था है। गांव वाले खुद अपना इन्जन चलाते हैं। इन्जन का खर्च यह समिति देती है और सब अब साथ है।

जीप हिचकोले खाती, ठोकर खाती, गुर्राती बढती गयी और फिर रुक गयी । हमारे सामने एक खूबसूरत लेण्ड-स्केप अंकित था। दूर दूर तक पहाडियों की कतारें उन पर बादलों की कतारें जैसे धुनी हुई रूई बिखरी हुई हो और फिर खेतों के झुण्ड। हरे हरे भरे भरे। जैसे हरा कच्चा कालीन बिछा हो । एक मुख्य नहर जो सीधी चली गयी है दूर दूर तक और उससे छोटी छोटी नहरें नालियां निकलती हैं, जो जीवन को पानी में घोल, फसलों को पिलाती है। बांध के दोनों ओर पहाडियों की दो टुकड़ियां, प्रहरी सी खड़ी है और उनकी पहरेदारी में भामयी का पानी बहता है दोनों टेकरियों को बांध मिला देता है। पानी काफी जमा रहता है और जी भर कर हुमस हुमस कर फसलों तक पहुँचाता रहता है।

मैं इस पेनोरेमिक व्यू को देखता रहा । फिर इस लेण्ड स्केप की तस्वीरे ली और न जाने किस भावुकता में समा, बांध के जल का आचमन किया । कुलकर्णी और साथी लोग मेरी भावुकता पर खुलकर हंसे। मैंने कहा —बन्धु, गंगा का जल तो अमृत है लेकिन भामयी बांध का जल ही जल है जो हमें जाना सिखाता है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

तभी बांध पर ग्राम के युवक कार्यकर्ता माला भाई आ गये।

श्री कुलकर्णी ने परिचय कराया—माला भाई इसी गांव के रहने वाले हैं। परन्तु श्री कान्त भाई के आश्रम में रह आये है यहां उसी पैटर्न पर आश्रम शिक्षा पद्धति शुरु करना चाहते है।

माला भाई अपनी योजना समझाने लगे। सबसे पहले बच्चों का स्कूल और पाठशाला शुरु की जा रही है। इस दिशा में काम शुरु भी किया जा चुका है। मालाभाई के ओसरे में ही बच्चे जमने लगे जिन्हे वे स्वयं पढाते थे। प्रौढ़ हाथ में पट्टी पैम ले कर आने जाने में हिचक रहे थे। लेकिन वे भी आ गये।

यहां एक स्थानीय ग्रामीण ने रोका। बात यह है कि मालाभाई इसी गांव के निवासी है। गांव के बुजुर्गों ने इन्हें भी और बच्चों की तरह इसी भूमि में नंग धडंग खेलते देखा है। अब सोचते हैं कि इनके सामने कैसे पढ़ने जायें। उन्हें लाज लगती है।

मालाभाई जरा सकुचा गये। उन्हें यह बात सुन कुछ सकपकाहट सी महसूस हुई और चेहरे पर एकदम बहुत सारा रक्त उमड़ आया। फिर जरा संभल कर मुस्कराते हुये बोले—यह बात ठीक है। मैं इसी मिट्टी में खेला, कूदा, बढा हुआ हूं। बड़ों के आगे तो सदैव बच्चा ही रहूंगा। इसलिये मुझे तो नहीं परन्तु गांव के बुजुर्गों को जरा संकोच होता है। और मालाभाई एक निर्मल हंसी हंस लिए। फिर बोले जैसे कोई व्रत ले रहे हों या अहद कर रहे हों——

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

"लेकिन भाई साहब, प्रौढ शाला चल निकलेगी। कुछ भी हो मुझ पर गांववालों का प्रेम है और मैं उसी प्रेम के खातिर आजिजी करूंगा। और नहीं तो मेरा मन रखने को ही लोग जायेंगे और एक बार पढ़ने का सुख मिला कि फिर कौन लौटता है ?"

"और आपके क्या प्लान है ?" मैंने पूछा।

"शुरू में तो शाला को सफल करना है और फिर इसके लिए भवन की व्यवस्था करनी है। किसान के बच्चों को मुख्य रूप से किसानी शिक्षा देना चाहता हूं। अक्षर ज्ञान अच्छा भला हो जाय तो भूमि की बात, बीज का प्रकार, खाद की किस्म समझनी होगी। कैसी जमीन में क्या बोना चाहिए, कैसे बोना चाहिए, पंक्तियों में बोने में क्या लाभ है, खाद देने पर पानी की कितनी जरूरत पड़ती है, मिश्रित कुआई क्यों करनी चाहिए और खेत पर मेढ क्यों जरूरी है। ये सब बातें किसान के बेटे को स्कूल में ही सिखानी होंगी। ताकि यहां से निकल कर वह बाबूगिरी की ओर प्रवृत न हो, धरती की ओर झुके-उनकी सेवा करे।"

मालाभाई खुद काश्तकार के बेटे हैं। उमर कोई विशेष नहीं- अनुभव भी कोई विशेष नहीं—फिर भी एक संकल्प किये हुए हैं। पढ़ा लिखा इसीलिये कि अपने गांव में कुछ काम करेंगे, गांव के प्रति अपने कर्तव्य, अपने उत्तरदायित्व को वे समझते हैं और इसीलिये वे संकल्पित हैं।

मालाभाई बोलते जा रहे थे—प्रत्येक बच्चे को हम कहेंगे कि वह अपने खेत में एक छोटे टुकड़े में खुद खेती करें।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

फसल के समय इन खेतों को देखा जायेगा और उसी अनुपात से श्रेणियां दी जायेगी। इससे नये कृषकों को भी नयी कृषि पद्धति का बोध होगा—उसके लाभ प्रत्यक्ष नजर आयेंगे और बात गले उतर जायेगी। बच्चे भी इस कार्य की ओर आकृष्ट होते जायेंगे।

मैं सुन रहा था और मालाभाई कहते जा रहे थे—फिर इस गांव में और आसपास ताड़ वृक्ष बहुत है। उनके पत्ते व्यर्थ जाते है। ताड़ के पत्तों की आकर्षक वस्तुएं बनायी जा सकती है जिन्हें बिक्री के लिये अच्छा बाजार भी मिल सकता है। हम बच्चों को इसका काम भी सिखायेंगे।

मन की परते खुलती जा रही थी एक के बाद एक। एक बहुत अच्छा कार्यकर्ता, गांव का सपूत, मां भूमि का जाया कमर कसकर खड़ा हो गया है। मलाई की तरह कांति उसकी छवि पर दीप्त थी परन्तु अन्तस का उत्साह जोश एवं ललक बार-बार प्रकट होते जा रहे थे। इस मनुष्य को चाहिये अर्थ, जाली व्हाउचर बनाने या गलत इन्द्राज करने को नहीं अपितु एक राष्ट्रीय कर्तव्य की पूर्ति के लिये इसे अर्थ चाहिये। इसे अर्थ न मिला तो जो काम पांच बरस में ही हो सकता है वह पचास बरस पिछड़ जायेगा। अर्थ मिले या नहीं परन्तु मालाभाई का कहना है कि हम धीरे धीरे बढेंगे। हमारे काम को लोग हाथोंहाथ उठा लेंगे। बस यही बात है कि हमारी गति धीमी हो जायेगी।

नहर पर अब बहुत लोग जमा हो गये थे। छोटे और बड़े मालाभाई की उमर के भी लोग थे, उसके पिता समवय के

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

भी और छोटे बच्चे भी जो– मालाभाई की औसार में पढ़ते थे। सब अपने मानुस की बात सुना रहे थे। उन्हें संतोष था कि उनका मानुस शहरी बाबू से कैसे जी खोल कर बातें कर रहा है। आखिर योग्य है न।

फिर मालाभाई ने एक लड़के को अपने घर दौड़ाया और कहा, कि अब आप मेरे घर चलिये। आप लोग तो चाय के शौकीन होते हैं। एक एक प्याला चाय का लीजिये और फिर जाईयेगा। अपने प्रस्ताव पर वह स्वयं ही मुस्करा दिए और हम लोगों के हंसने की बारी को छीन सा लिया।

हम सभी चाय की तलब महसूस कर रहे थे। किसी को इस प्रस्ताव से एतराज नहीं था। अपितु सभी यह कहने लगे। साथ ही गांववाले भी थ जो अब टुकड़ियों में अपनी बातचीत कर रहे थे।

मालाभाई के यहां चीनी के कुछ कप थे। उनमें कुछ खंडित थे, खंडित विश्वासों की भांति। कुछ गिलास तैयार थे और सभी को चाय, गरम गरम दूधिया चाय पीकर प्रसन्नता हुई। ताजगी हुई।

जीप के इंजिन में पैट्रोल रूपी विश्वास ने शक्ति पहुंचायी और वह स्टार्ट हो गयी। मालाभाई हमें हाथ जोड़कर विदाई दे रहे थे। मैं मालाभाई के व्यक्तित्व की सादगी और जन्म भूमि के ऋण की अदायगी की भावना से ओत-प्रोत हो गया हूं। जीप आगे और आगे बढ रही है और लगता है जैसे मालाभाई और अन्य ग्रामीण अपने विश्वास और आस्था का हल लिये

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

धरती पर खड़े हैं कि सभी वाधाओं के बंजर पन को हल कर वे दूर कर देंगे और इसी भूमि में नव जीवन के पौधे रोपते चले जायेंगे।

चारों ओर फैला पहाड़, ढलवानो पर उतरते से खेतों के झुण्ड, उबड़-खाबड़ रास्ता और बढती हुई जीप की गुर्राहट.... घर्र....घर्र....घर्र जीवन का पथ बढ़ रहा है। बढता जा रहा है।

———

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

गाथा-गाथा-आस्था

लौटती बार राणापुर कुछ समय के लिए रुके। मुझे बताया गया कि पास ही वन ग्राम है जो पुरातत्व की दृष्टि से महत्त्व-पूर्ण है। यों पुरातत्त्व में मुझे कोई विशेष दिलचस्पी नहीं है परन्तु सदैव मैं इस ओर इसी दृष्टि से देखता रहा हूं कि शायद मेरे काम की कोई चीज निकल आये। पुरातत्त्व संबंधी सामग्री का विवरण सुनने में मुझे रस आता है और इसी में कहीं मैं अपने लिए कोई एक टुकड़ा चुन लेता हूं। वैसे धरती

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

में गड़ी हुई जो मूर्तियां प्राप्त होती है वे भी मुझे भली लगती हैं ! इन खंडित मूर्तियों की तीखी-तीखी आंखें. लम्बी-लम्बी नाक और पतले पतले ओंठ ! कानों में कुंडल, माथे मुकुट ज्यादातर बौद्धकालीन प्रभाव दिखाई देता है ।

मैंने श्री कुलकर्णी से प्रस्ताव किया—आपको कोई एतराज न हो तो बन तक हो आयें ? शायद आधा पौन घंटा और लग जायेगा ।

सभी सहमत हो गये । श्री कुलकर्णी को इसलिए भी एतराज नहीं था कि बन ग्राम उनके ब्लाक की सीमा में ही आता है इसलिये वहां तक जाया जा सकता है । अन्यथा मुश्किल होती ! शासन ने ब्लाक की जीप पर नियंत्रण रखने के लिए कुछ नियम बना रखे हैं जिनके अनुसार ब्लाक की जीप अपनी सीमा से बाहर बिना स्वीकृति के जा नहीं सकती । इसके पीछे शायद भावना यही है कि जिस व्यापक उद्देश्य की पूर्ति हेतु जीप उपलब्ध की गई है उसका उसी के लिए उपयोग हो । अपनी जगह ये नियम अच्छे हैं लेकिन कई लोगों को यह उचित नहीं लगता हैं । स्वच्छन्दता पर रोक-थाम से लोग प्रायः भड़कते ही हैं ।

जीप फिर सड़क पर भागने लगी । कुछ सहयात्री बन का संबंध पौराणिक गाथाओं से बता रहें थे और परस्पर चर्चा कर रहे थे कि कैसे यहां भीम का वास रहा है और अभी भी उनके चिन्ह विद्यमान हैं ।

बहुत थोड़े ड्राईव्ह के बाद जीप ने सड़क छोड़ दी और

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

आधे फर्लांग से भी कम रास्ता तय कर एक ओर ठहर गई। हम उतरे तो चारों ओर गहरी छाया थी। आम की अमराई में उपर से रोशनी आने की कोई गुंजाइश नहीं थी। जो प्रकाश आ भी रहा था वह घुटने चल कर, नीचे से आ रहा था। चारों ओर आम ही आम। घने और भरे हुए। एक मोहक खुशबू फिजा में समाई हुई थी और मेरी नासिका स्वागत में फड़कने लगी।

चार कदम आगे बढ़े। एक पुराना मंदिर, एक कुआं और बिखरे हुए कंकर-पत्थर। एक पीपल के तने से सटकर रखी थी एक विष्णु-मूर्ति जिस पर ढ़ेर सारी धूल जमी हुई थी और चिड़ियाओं के बीट फैले हुये थे। किसी भक्त ने चन्दन लगा दिया था तो किसी ने कुंकुम से मूर्ति का माथा रंग दिया था।

मूर्ति वास्तव में बहुत भव्य थी। एक दिव्य आलोक प्रतिमा के मुख पर फैला हुआ था। मन बड़ा क्षुब्ध हुआ। शायद यह मूर्ति भी किसी बचकाने हाथों से टूट जायेगी और तब नींद खुलेगी इसे म्यूजियम में ले जाने के लिए। मुश्किल तो यह है कि सब कोई ऐसा मानकर चलते हैं कि जो काम जिसका हो वही करे। कोई भूलकर भी उसमें हाथ डालना या उस पर संकेत करना नहीं चाहता है। कब तक यह क्रम चलेगा?

आसपास बिखरे कंकर पत्थर में कुछ छोटी-छोटी मूर्तियां भी थी, अधिकांश टुकड़े। मन्दिर के समीप ही एक फूस का झोपड़ा था जिसमें एक बाबाजी का आसन था। झोपड़े में बाबा की धूनी जल रही थी और वे बैठे-बैठे चिलम पी रहे थे। चिलम में तम्बाकू थी या चरस या गाँजा, यह राम जाने मगर बाबाजी

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

अलमस्त हो रहे थे और उनकी आखें पलाश के फूल सी लाल हो रही थीं। एक ओर जलती आंच पर उनके टिक्कड़ सिक रहे थे। बड़े-बड़े रुखे और बेहतरीन बालों की जटा लिये बाबाजी एक अजीब गर्व में भींगा हुआ था। बोलता तो जैसे उपकृत कर रहा हो। दूसरे साथियों पर वह रौब डालता रहा। बिना हम से पूछे तस्वीर मत निकालना, मूर्तियों को हाथ न लगाना और जाने क्या-क्या वह बोलता रहा। मुझे बाबा का यह दर्प कुछ रुचा नहीं। मैंने उसे उसकी स्थिति का बोध कराने हेतु पूछा---

"बाबा क्या नाम हैं तुम्हारा ?"

"साधू,सन्यासियों के भी कभी नाम होते हैं बच्चा।" और मुझ पर उपेक्षित दृष्टि डाल हंस दिया।

"क्यों नाम बताने में संकोच क्यों ? हमने तो साधुओं के नाम सुने हैं और सन्यासियों के भी।"

बाबा हंसने लगा जैसे उसने मेरी बात पर ध्यान देना ही जरुरी न समझा हो। फिर वह बोला—

"बच्चा, हम तो --फिरते रहते हैं। आज यहां, कल कहीं और ? वो तो समझो यहां मन लग गया सो जमें हैं वरना अब तक जाने कहां होते ?

"कहां के रहने वाले हो बाबा"

"अरे हमारा क्या घर-द्वार। भगवान के द्वारे पड़े रहते है ?" वह फिर हंसा। मुझे साधु का हास्य कुछ जंचा नहीं। वह

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

अपने दर्प के आसन से उतरना ही नहीं चाहता था। मैंने कुछ लताड़ते हुए कहा—" आप लोगों को रोकते क्यों हैं कि तस्वीरें न निकालो—मूर्ति न छुओ ? जानते हैं ये सरकारी सम्पत्ति हैं आपकी नहीं । इस तरह अपना गुरुत्व न जमाइये।" और मैं झोंपड़े से बाहर आ गया ।

बाबा चिलम पीता रहा और अपने टिक्कड़ सेंकता रहा। हम लोग बाहर आकर विष्णु की मूर्ति को ठीक स्थान पर रख, चित्र लेने लगे । चित्र लेने के लिए मूर्ति को स्नान कराना, उस पर जमी धूल और कुंकुम चन्दन को साफ करना जरुरी था । बाबा ने अपनी बालटी दे दी। हम मूर्ति को धो चुके तो उसके सूखने की राह देखते रहे । गीली मूर्ति की अच्छी तस्वीर नहीं आ सकती थी।

मैंने मजाक में श्री कुलकर्णी से कहा—इन बाबा लोगों को भी तो काम में लगाओ । ये तो खाते-पीते और मस्त रहते हैं।

' इनके लिए भारत साधु समाज बन गया है । इन लोगों को उसका मेम्बर होना चाहिये।"

मुझे फिर मजाक सूझी ? कूए पर आन बैठे बाबा को सम्बोधित कर पूछा—बाबा, तुम भारत सेवक समाज के मेम्बर हो या नहीं ? आजकल तो हर साधु को उसका मेम्बर बनना पड़ता है।"

बाबा बोला—अरे हम किसी के एम्बर, मेम्बर नहीं हैं। हम तो भगवान के मेम्बर हैं।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

'पर बाबाजी, साधुओं को उसका मेम्बर होना चाहिए वरना उसे कोई साधु नहीं मानेगा। आपके पास साधु होने का सर्टीफिकेट कहां है ?

अब वास्तव में बाबा जी का चित्त विचलित हो गया। उन्होंने दीन स्वर में पूछा—भैया, हमें तो ये कानून कायदे मालूम नहीं। फिर भी तुमने बताया सो हम मेम्बर बन जायेंगे। हम किसी को दुख नहीं देते हैं, बस यहां एकान्त में पड़े है। तुम हमारी रिपोर्ट मत करना।

मुझे बाब की सादगी पर हंसी आ गई। बस, इतनी सी देर में चीं बोल गये। अभी कुछ देर पहले तो बड़े मगरुर हो बोल रहे थे। मैं पूछ बैठा—बाबा तुम्हारा गुजर कैसे होता है यहां ?

बाबा ने मुझे एक सन्देह की नजर से देखा। फिर कहा यहां आने जाने वाले भील भिलाले आटा-दाल दे जाते हैं सो काम चल जाता है। और यहा है भी क्या ?

"बाबा लोगों को समझाया करो कि वे खूब मेहनत करें, कुए खोदें, खेत सींचे और अच्छी फसल पैदा करें। आप यही काम करें यहां बैठे बैठे।" मैंने मुस्कराते हुए कहा।

विष्णु की मूर्ति सूख गयी थी। हमने दो चार चित्र लिए और फिर बढ़ने लगे। पीछे से बाबाजी ने दोनों हाथ जोड़ हमें कहा-जय सीताराम ! हमने घूम कर उन्हें देखा और हाथ जोड़ लिये। बाबाजी जब आश्वस्त हुए, उन्होंने पुनः हाथ जोड़े और हम जीप में बैठ गये।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

फिर वही रास्ता। वही सड़क थी जो राणापुर से हमें यहां ले आयी थी। एक साथी ने कहा—आपने तो बाबाजी को चौंका ही दिया। बेचारा बहुत भयभीत हो गया था।

मैंने कहा---इन साधू सन्यासियों का हमारे गांव के भोले-भाले लोगों पर आज भी बहुत असर है। यदि ये लोग हमारा काम करने लगें या हमें मदद देने लगें तो बहुत जल्दी हमारा काम हो जाये। इसीलिये मैं बाबा से ऐसी बात कर रहा था।

रास्ते भर कई तरह की चर्चा चलती रही, तरह तरह की बातें होती रहीं। सड़क के एक ओर कुछ गात्या नजर आए। तीन-चार पत्थर गड़े हुये थे और उनके चारों ओर चोंतरा बना हुआ था। इन पत्थरों पर, एक पर एक पुरुष की आकृति खुदी हुयी थी तो दूसरे पर एक युवती की आकृति अंकित थी। तीसरे पत्थर पर एक सर्प फन फैलाये सामने देखता हुआ अंकित था। पत्थरों पर आकृति के अंकन में काफी कुशलता और सफाई से काम किया गया था विशेष कर युवती की भौंहों और ठोड़ी को अंकित करने में पर्याप्त चातुर्य बरता गया था।

मैंने पूछा---ये गात्या किस गाथा के प्रतीक हैं।

एक साथी बताने लगा---यह भील और भीलनी पति-पत्नि थे। दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। हमेशा साथ रहते। दोनों युवा थे और किसी बात कीं फिक्र नहीं थी।

एक रात बहुत पानी बरसा, बहुत पानी बरसा और इन दोनों ने महुए की कच्ची शराब पी ली और बरसते पानी में दोनों नाचते रहे। फिर जब पानी थमा तो भीलनी की ओढनी

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

पर दोनों सो लिये। न जाने कब इन दोनों को सर्प ने काट लिया। सुबह लोगों ने इन दोनों को एक लुगड़े पर मृत पाया और पास ही सर्प को तीर में बींधा हुआ मरा देखा। बस उन्हीं की स्मृति में ये गात्या बनाये गये है। उस गाथा को प्रति वर्ष याद किया जाता है। यहां एक छोटा मोटा मेला जुटता है। भील-भीलनियां यहां आते हैं, नाचते हैं और गात्या के सामने शीश नवा अपने प्रेम को अमर करने के लिये आशीष मांगते हैं।

गात्या का चौंतरा अच्छा बना हुआ था और गात्या पर कुंकुंम और सिंदूर लगा हुआ था। सड़क पर सोने के कारण गात्या बाबाजी की प्रातः ही पूजा हुआ करती थी। साफ सफाई भी अच्छी थी।

मैं जानते हुए भी पूछ बैठा—क्यों कुलकर्णी भाई, इधर गात्या पर भीलों की बहुत श्रद्धा है? गात्या के मेले में लोग भी बहुत जुटते होंगे?

"हां", उन्होंने जबाब दिया। गात्या इधर देवता की तरह है। गात्या के मेले में बेहद लोग आते हैं। और यहां आकर पीते भी खूब हैं। फिर पीकर नाचते हैं और नाचते-नाचते ही लड़ पड़ते हैं और खून हो जाते हैं! खून खराबी तो जैसे इन लोगों के लिये मामूली सी बात है।

मैंने सुझाया—यदि इन गात्याओं के मेलों की व्यवस्था आप लोग शुरु कर दें तो कैसा रहे? आपका ही सेवादल यह काम करे। इनकी भाषा में नाटक करवायें जायें, गीत हों, भजन हों, और नाच भी हों। कुछ कढ़ाई भी की जाये। आप अपनी

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

बात भी कह सकेंगे और मेले की व्यवस्था में सुधार होगा। हो तो सकता है?

श्री कुलकर्णी ने सिर हिलाया—हां....हां! आयडिया तो अच्छा है। कोशिश करने पर हो भी सकता है। परन्तु है। कहीं अपनी व्यवस्था में भी खून खराबी हो गई तो मुश्किल होगी।

'इसीलिये तो मैंने पहले ही कहा कि थोड़ी कड़ाई की भी जरुरत हो तो कीजिये! यानी सेवादल के साथ ही कुछ पुलिस के जवान भी रखें जायें? मेरा तो सवाल है कि दो तीन बरस में ही आपके सभी गात्याजी के मेले अच्छे जम जायेंगे और आपके उद्देश्य की पूर्ति में बहुत बड़ी सहायता मिलेगी।

मैं सिगरेट सुलगाकर अपनी यात्राजन्य थकन को धुंए के साथ उगलने लगा। जीप ठाठ से आगे बढ़ रही थी। छोटे-मोटे पत्थर और गव्हर की परवाह किये बिना बस गतिशील थी।

मन में सोचने लगा—और कितना घूमना है? क्यों नहीं लौट रहे हो। अब और कितना रुकने का विचार है? चावल की एक कनी तुम देख ही चुके हो। सारी इण्डिया में सर घुमाने में क्या तुक है? हां-हां सब अब ठीक है। अब लौटना ही चाहिये। घर की याद आ रही है, बच्चों की याद आ रही है।

आज झाबुआ में रुकना होगा। लेकिन कल पार जाया जा सकता है। फिर से दोस्तों का जमघट, चाय की प्यालियों पर कह-कहे, टेबल पर पांव पसार कर बड़ी बड़ी बातें ...थियेटर

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

और घूमना....घूमना और गप्प लड़ाना....यह सिलसिला तो चलता ही रहेगा।

सड़क के कोनों में सिमट कर भील दम्पति के जोड़े चले जा रहे हैं—एक कतार में। एक अनुशासन में बंधे हुए यों बढ़ रहे हैं जैसे कमांडर की आवाज पर सैनिक चलते हों। इन्हें किसने सिखाया यह सब ? हम शहरी बीच बाजार में सायकलें लेकर खड़े हो जायेंगे, रास्ता घेर लेंगे और टोके जाने पर आंखों से अग्नि-स्फुलिंग बरसाकर देखेंगे कि टोकनेवाला अभी भसम हुवा जाता है। कैसे यहां मर्द और औरत समान स्तर के भागीदार है जीवन में। बाजार जायेंगे, तो मर्द-औरत साथ-साथ। नृत्य करेंगे तो सब साथ-साथ। मेले में जायेंगे, खेत पर जायेंगे, मजूरी पर जायेंगे तो साथ-साथ। दोनों शक्ति भर श्रम करेंगे और माथा उंचा कर साथ-साथ चलेंगे। मर्द जुलुम करेगा तो औरत उसका जवाब देगी। वह मर्द की दबेल नहीं। उसे अपनी शक्ति का अहसास है। औरत आंख फेरेगी तो मर्द पहले स्वतंत्र हो लेगा। मर्द और औरत की समानता, परस्पर आजादी की एक स्वस्थ भावना से भरे रहते हैं—शहरी सभ्यता जिससे आज भी कोसों दूर हैं।

चकवा-चकवी, पीलक और तोतों के जोड़े ढेर सारे उड़ रहे हैं। आसमान में सूरज की किरणें थककर लेट गई हैं और ठंडी हवा बराबर चलने लगी हैं। शायद आज पानी बरसे : पानी बरसे तो जीवन लहलहा जायेगा, "पेड़ पौधे खिलखिलाने लगेंगे, पेड़ों के पांत भीग-भीगकर धूप में चमचमाने लगेंगे और गाय का बछड़ा रंभाकर, प्यार में भर अपनी मां के पेट में भिट्टी मारने लगेगा।"

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

मैं इस बरसात में नहाना चाहता हूं-भीजना चाहता हूं। लेकिन बात को पी लेता हूं क्योंकि शायद सभी मित्र, मुझे सनकी ठहरा देंगे मेरी फूहड़ता पर हंसेंगे।

मांडली नाथू का माल भाई और वन का साधू बाबा। आखिर मनुष्य के ये रूप कब तक चलेंगे- हम इन्हें कब तक चलने देंगे। धर्म का मार्फिया देने वाले को भी यही छूट रही तो वह मालाभाई जैसे लोगों को नहीं तो इन भील-भीलालों को तो लम्बी तान सुला देगा। लेकिन शायद ऐसा नहीं होगा ...नहीं होगा क्यों-कि मालाभाई जैसे लोगों का व्यक्तित्व फैल रहा है....असर पैदा कर रहा है। वह सोये हुओं को भी झिंझोड़कर उठायेगा उट्ठो लोगों, नये समाज की दस्तक सुनो।

और बी०डी०ओ० ने मुझे झिंझोड़ा, बन्धु, उतरो। झाबुआ पहुँच गये। मैं पुनः धरती पर आ गया मगर मेरे कानों में संवेदन की दस्तक बराबर पहुँचती रही!

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

अच्छे-भली जिन्दगी का बौद्धिक मर्सिया

मैं अपनी बात कहना चाह रहा हूं—दोस्तों को समझाना चाहता हूं। और दोस्त है कि सब के सब नान सीरियस। कोई इस और ध्यान देना नहीं चाहता। ध्यान कोई देता भी है तो एक यंग-मिश्रित हंसी ओठों पर खेल जाती हैजै से मेरे इरादों में उन्हें शंका है। मेरे मन की गठानें और कस जातीं हैं और ज्यादा उलझ जाती है। शायद मैंने गलती की जो इन सब लोगों को अपनी बात सुनाने चालीस मील चलकर यहां इन्दौर

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

आया। आया भी और पांच-सात रुपयों का खून भी किया। दोस्त मजे में मेरी सिगरेटें फूंक रहे थे और दो बार चाय के जो दौर चले थे उनके पेमेन्ट के लिये "बुर्जआ" कामरेड होटल ब्वाय को मेरी ओर मुखातिब कर रहा था। खैर यहां आने का गुनाह जो किया सो अब यह भी सहना पड़ेगा कि दूसरों की दूकान पर बैठ चाय पीने के पैसे भी मुझे ही देने पड़ेंगे।

जेल रोड बहुत आबाद और व्यस्त मार्ग है यहां का। यहां की सांझ का सुख भोगने को जैसे इन्दौर की सारी मस्ती यहां जुट जाती है। सांझ होते होते यह सड़क कास्मोपोलिटन रुप ग्रहण कर लेती है। गुजराती और मराठी जोड़े, मद्रासी और मैसूरी जोड़े, मालवी स्त्रियां और पूर्वी भैया, राजस्थानी धज में राजपूती जोड़े, मिलों के मजदूर और दफ्तरों के बाबू, सरकारी और गैर सरकारी डाक्टर और कालेजों के अध्यापक स्कूल के बच्चे और हाय स्कूल के लड़के और कालेज के कुलबुले छात्र। सारे रंग इस सड़क पर चलने लग जाते हैं और यह सड़क जैसे अपने आप पर सम्मोहित हो जाती हैं लजा जाती है।

जेल रोड पर बड़ा नाम—छोटा मकान बद्री मालू अपनी गंजी टाट को सहलाते हुये जन साहित्य सदन पर रोज बैठता है। उसकी दूकान हफ्ते में कब बन्द रहती है यह किसी को नहीं मालूम। एक बार रविवार को एक इन्सपैक्टर चैक करने गया तो उसने गुरुवार वाली प्लेट बता दी जिसमें लिखा था कि दूकान प्रति गुरुवार को बन्द रहेगी। बाद में पता चला कि उसने ऐसी ही प्लेटें सात दिन के लिए बना रक्खी है। शायद वह बारी बारी इन्हें चैकिंग इन्सपैक्टर को बताता हो। (लेकिन उसने मुझे बताया है कि वह हफ्ते में एक दिन बंद रखता है।)

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

उसकी दुकान रेल्वे के साथ मुसाफिरों वाली डिब्बे की हमशक्ल है। चौड़ाई बमुश्किल तीन चार फुट होगी और चौगुनी लम्बाई। इसी जगह में उसने टीम टाम कर रखा है। एक शो,केस है जिसमें सेक्स और क्राईम की सनसनीखेज पुस्तकों के जेबी संस्करण डिसप्ले किए हुये हैं और हिन्दी, चीनी रुसी अमरीकी सब मेगजीन्स हुक्स में टांग रखी हैं। कम्बख्त कहता है कि मेरी दुकान सह अस्तित्व की मूर्तरुप है। बैठने की उसके यहां मुश्किल। लेकिन चूंकि ये बैठने वाले ही उसकी किताबें.... खरीदते हैं या खरीदवाते हैं इसलिये वह सब बर्दाश्त कर लेता है। कभी कभी दोस्त लोग बैठ जाते हैं और उसे टहलना पड़ता है।

अब चूंकि मेरे खर्चे पर सब का चाय-पान हो चुका था और बिल का पेमेन्ट किया जा चुका था इसलिये वह हम लोगों के बैठने में जरा भी दिलचस्पी नहीं रखता था और चाहता था कि हम लोग वहां से टल जायें।

मोदी कह रहे थे—बंधु तुम्हारा विचार तो अच्छा है लेकिन बात यह है कि सरकारी पैसा वेस्ट बहुत जाता है। जितना पैसा खर्च होना है उतना काम होता नहीं।

मैंने बात की पूंछ पकड़ ली—ठीक है उतना काम नहीं भी होता है तो थोड़ा तो होता है। हम क्या उससे भी आंखें मूंद लें ? मैं तो कहता हूं कि जब इन सब बातों पर लिखना होगा तो कुछ लाभ ही होगा।

एक मजदूर साथी जो खड़ा-खड़ा हम लोगों की बातें काफी देर से सुन रहा था एकाएक उत्तेजित होकर बोला—

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

"आप लोग हम पर क्यों नहीं लिखते हैं ? हमारी जद्दो-जहद क्या आपकी आंखों में नहीं चढ़ती है ?

मैंने जवाब दिया -वह तो लिखा ही जा रहा है। मजदूरों की हड़तालों को लेकर कुछ कम नहीं लिखा गया है। लेकिन तुम किस खूबी से, खराबी का खूबसूरत कपड़ा बुनते हो और उसे बुनकर सन्तोष पाते हो इस पर लिखा नहीं जाता है। यह भी तो विषय हो सकता है लिखने के लिए।

"हां ! हां ! यह भी लिखो। हमारे सभूचे जीवन पर लिखो। कहते हुए मजदूर साथी बैठने की जगह तलाश करने लगा। लेकिन जगह थी नहीं और मालु की दूकान पर दो बच्चे पट्टी पहाड़ा की चौंपड़ी लेने आ गये थे सो मजदूर साथी को खिसकना पडा।

मालु पूछने लगा कि हम लोगों में से कोई जिवागो या लालिता लेने का इच्छुक है। केवल एक एक प्रति दोनों की बची है मतलब साफ था यानी किताब न लेनी हो तो मेहरबानी कर सीट खाली कीजिए न। क्यों धन्धे पानी के वख्त टेम खराब कर रहे हो ? मैं उठने लगा तो मोदी, महेन्द्र व आनन्द भी उठ गये।

महेन्द्र ने कहा कि तुम अपनी बात आज शाम की मीटिंग में रखो। सभी लेखक आयेंगे। जरा अच्छा डिस्कशन हो जायेगा।

मैं कुछ नहीं बोला। मन में सोचता रहा यह डिस्कशन भी खूब है। हम बुध्दिजीवी लोग बस इसी गम में घुले जाते है कि दुनिया का क्या होगा ? पर हम कभी अपने आजू-बाजू नहीं देखते, ऐसा क्यों ? लिखने की स्वतन्त्रता का क्या यही अर्थ है

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

कि हम आसमान में तने हुए इन्द्र धनुष को तो देखें मगर धरती पर उभरने वाले रंगों को देखकर भी न देखे।

"मैं शायद न आ सकूंगा। मैं आज ही लौट जाना चाहता हूं मुझे कुछ भी डिस्कशन नहीं करना है"। मैंने कहा और चुप हो लिया।

संम्भवत: मेरी झुंझलाहट को सबने महसूस किया और इसीलिए कोई न बोला। मैंने अपने आप से कहा-वृथा आये यहां। मैं इक्के पर सवार हो बस स्टैण्ड पर आ गया। सभी मित्र कुछ झेंपे झेंपे से विदा हो गए।

बस में वही खींचातान। प्राइवेट बस में जैसे सभी मुसाफिर एक साथ बैठ जाना चाहते थे। पांच मुसाफिर की सीट पर सात-सात पहले ही बैठ चुके थे और अब जो मुसाफिर टिकट कटा कटाकर अन्दर प्रविष्ट हो रहे थे वे बींचोबीच हवा का प्रवाह रोक रहे थे और बैठे हुए मुसाफिरों की ओर याचनाभरी दृष्टि से नहार रहे थे। बैठे हुए मुसाफिरों का दम घुटने लगा और सभी बस ड्रायव्हर को गाडी चलाने का आग्रह करने लगे। ड्रायव्हर खुली हवा में खड़ा बहुत मजे में सिगरेट पी रहा था क्यों कि उसकी सीट तो सुरक्षित थी। जब चिल्ल पों बढने लगी तो ड्रायव्हर अपनी सीट पर बैठ गया और पांच मिनिट तक पों··पों··पों··पों करता रहा। इस पों··पों ने कुछ टहलते हुए मुसाफिरों को बस में खींच लिया और अब ये अपनी अपनी सीट के लिए भागने लगे।

"यहां से उठिये जनाब मैं अपनी थैली पहले ही रखकर गया था।"

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

बैठा हुआ यात्री उठने को जरा भी तैयार नहीं था सो झट बोला—

"भाई साहब सीट कोई रिजर्व तो नहीं की थी। जिसे जगह मिली वह बैठ गया। कंडक्टर से कहिये वही जगह करेगा।"

कंडक्टर पीछे की सीट से चिल्लाता है—ड्रायव्हर साहब गाड़ी बढाओ। साली घंटी भी खराब हो गई है। चलो.......। रिजर्व सीट वाले खड़े हैं, जैसे लुट गये हों और बैठे हुए महाशय परमानन्द अवस्था को प्राप्त हो गये थे। कैसा छकाया जनाब को—कुछ ऐसे मनोभाव उनके मुख कमल पर पानी की बूंद की तरह फिसल रहे थे।

ड्रायव्हर की सीट के आगे, बांये से उपर एक सूत्र था—'साथ क्या जायेगा प्यारे' और उसी के आगे निर्देश था—गाड़ी में बीड़ी सिगरेट पीना मना है। पैसेन्जरों के सिर के उपर भी कुछ शुभ वाक्य आशीस दे रहे थे, चेता रहे थे कि चलती गाडी में चढना उतरना मना है—शरीर का कोई भी हिस्सा गाड़ी के बाहर न निकालिए!

संयोग से ड्रायव्हर की सीट के पास वाली सीट पर कोई पुलिस इन्सपेक्टर बैठे थे। बस मुसाफिरों ने उन्हें लक्ष्य बना, अपनी व्यथा वेदना उगलनी शुरू कर दीं।

अरे साब, क्या अंधेर है। देखिये न सवारियां भेड़ बकरियों की तरह ठूंसी हुई है। मगर कौन पूछनेवाला। जब अफसर लोग ही साथ है तो चैक कौन करेगा?

दूसरा शिकायत का सामान्यीकरण करता है। सभी जगह यही हाल है साहब। कोई किसी की नहीं सुनता है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

"एक सिंधी भाई किसी का सुना हुआ फिकरा फिट करते ह जनता का राज है जनता का। पहले जनती थी माता, और अब सब जनता है। और अपनी बात पर वे स्वयं हो हो कर हंसने लगे। कुछ लोगों को शायद इस टुच्चेपन में लुफ्त आया और उन्होंने ने भी सांई की हंसी में योग दिया।

पुलिस इन्सपेक्टर निर्विकार फ्रंट सीट पर किसी के भी मुंह नहीं लग रहे थे या किसी को मुंह नहीं लगा रहे थे।

एक शख्स पीछे से बोलता है—आजकल आलोचना करना हर कोई जानता है। जहां देखिये आलोचना सुनने को मिल जाती है।

सिंधी भाई उबल पड़ते है "अरे साहब और हम कर ही क्या सकते हैं ? सरकार हमारे लिए कुछ भी नहीं कर पायी है। हम आलोचना कर जी भी ठन्डा नहीं करे ?"

मैंने धीरे से कहा—जरुर, सरकार ने आपके लिए कुछ नहीं किया है। फिर आलोचना कर जिन्दा रहिये। और आवाज को धीमी कर मैंने उन से पूछा आप क्या करते हैं ?

उन्होंने बताया कि वह असिस्टंट इंजीनियर है बस रिटायर होने को दो बरस घटते हैं। एक लड़का भोपाल में मेडिकल कालिज में पढ़ता है और दूसरा ठेकेदारी करता है। यह जो साथ में छोटा है यह मेट्रिक में है। हम तो साहब रिटायर होने पर ठेकेदारी शुरू कर देंगे।

फिर भी आप असन्तुष्ट है ? ऐसा क्यों ? मैं पूछता हूं और वे फिर अपना वही घिसा पिटा हुआ रिकार्ड लगा देते हैं क्या करें साहब हमारा खर्च पूरा नहीं पड़ता···कुछ बचता नहीं

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

मैं सोचता हूं इन्हें बचाने की फिक्र है। एक लड़का मेडिकल में है—एक ठेकेदारी करता है. खुद दो जून पेट भर लेते हैं या कि अपने बच्चों को पढा लेते है। आज भी हजार हजार बेकारों की टुकडियां नौकरी दफ्तरों को घेरे रहती है, उनका संघर्ष और इन सिंधी भाई का असन्तोष। दोनों एक साथ एक पटरी पर चलना चाहते हैं।

एक महाशय भ्रष्टाचार की तकसीम बता रहे थे। वे हाथ फैला फैलाकर, अधिकार भरे स्वर में वर्णन कर रहे थे और दूसरे यात्री सत्य नारायण की कथा सुनने जैसी तल्लीनता से भक्तिभाव से सुन रहे थे।

"अब जंगल खाता को लीजिए। बेचारे आदिवासी लोग जंगल से लकड़ी काटकर लाते है और जंगल खातेवाले उन्हें पकड़ लेते हैं। उनकी बैलगाडियां जब्त कर लेते हैं और मुकदमा चलाते हैं। अब जब तक मुकदमें का फैसला नहीं होता तब तक उनकी गाडियां छूटती नहीं। मैं तो कहता हूं कि जंगल पर ही आदिवासी आज तक पले हैं। अब उससे उन्हें वंचित किया तो वे कैसे जियेंगे?

दूसरा श्रोता कहता है कि इसीलिये तो जंगल में सत्याग्रह हो रहा है। आदिवासी धड़ाधड़ जंगल काट रहे हैं और जेल जा रहे हैं। सब जेलें भर जायेंगी।

तीसरी आवाज पूछती है—इस सत्याग्रह से आदिवासियों का हित कैसे होगा जरा यह तो समझाईये?

दूसरा बताता है कुछ आवेश के साथ "होगा क्या? सरकार को वे समझाना चाहते हैं कि जंगल आदिवासियों के है

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

और इसलिये वे जेल जायेंगे और अपनी न्यायोचित माँगे मनवाकर रहेंगे।

तीसरा व्यक्ति कहता है—जंगल आदिवासियों के हैं सो काट डालिये उन्हें। कर दीजिए सब मैदान। फिर पानी न बरसे तो कहिए सरकार ने जंगल कटवा दिये हैं। साहब इस सत्याग्रह से किसे लाभ मिल रहा है? इसमें तो ठेकेदार लोग भी मिले हुए हैं। ये आदिवासियों से जंगल कटवाते हैं और खुद उनकी लकड़ी आधी और एक चौथाई मूल्य में खरीद लेते हैं। पकड़े गये तो जेल में जायेगा भोल। ठेकेदार का क्या नुकसान है इसमें! बेचारे आदिवासियों को एक्सप्लाइट किया जा रहा है।

मुझे न जाने क्यों यह आवाज सुलझी हुई लगी और मैंने उस व्यक्ति को जी भर देखा जो छत पर हाथ टिकाये खड़ा था।

कोई और कह रहा है हर जगह यही रंग है साहब, गांवों के स्कूल देखिये। खुलने को तो बहुत खुल गये है परन्तु मास्टर इन जगहों पर रहते ही नहीं है। गांव के सरपंच को पटा लेते हैं और हाजरी पत्रक की पुष्टि करवा, त..खा ले लेते हैं और चार-चार बरसों से चल रहे ऐसे स्कूलों में बच्चे अभी भी श्री गणेश ही लिख रहे हैं।

काफी सच्चाई थी इस बात में भी लेकिन हल कहीं नहीं था! मुझे स्मरण है एक बार यहीं सवाल किसी विकास समिति की बैठक में भी उठा था। इस सवाल ने वहां भी लोगों को मथ डाला था परन्तु कोई हल सामने नही आ सका था। बच्चों को पढ़ाने की इच्छा गांववालों में होना स्वाभाविक है। स्कूल खोले जाते है लेकिन इधर के गांव तो जो है सो हैं। एक एक

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy
मील में फैली हुई टापरियां मिलकर एक गाँव बनाती है। मास्टर को रहने की जगह नहीं। स्कूल लगता है। फिर मास्टर कहां रहे? और मास्टर भागता है। शहर या कस्बे के पास रहना चाहता है। बदली करवाने की कोशिशों में लग जाता है या फिर सरपंच को खुश कर हाजरी पत्रक पर अंगूठा लगवा लेता है। उपचार जो बताया गया हैं वह तुरन्त संभव नहीं। हर गाँव में स्कूल का भवन हो और उसी के साथ मास्टर के निवास की व्यवस्था हो। इसके लिए धन चाहिये। देश गरीब, लोग गरीब एकदम यह कैसे हो? इसलिए जितना भी संभव हो सके किया जाये बस। परन्तु शहरों में रहने वाला सामान्य व्यक्ति इस गहरायी म क्यों जाने लगा? उसे इन सब कठिनाईयों मुसीबतों से क्या लेना देना?

और बस अब तक आधा रास्ता तय कर चुकी थी और घाटा बिल्लौद के स्टैण्ड पर विश्राम कर रही थी। यात्री बाहर निकल गए थे और हाथ पैर फैला रहे थे। छोटे-छोटे बच्चे बस के इर्द गिर्द और बस के अन्दर घुस गए थे और चिल्ला रहे थे—बामनिया का चिबड़ा, ताजा और मसालेदार चिउड़ा।

शायद मनुष्य की यह कमजोरी है कि उसे स्थानीय वस्तु में कोई आकर्षण नहीं दिखता इसीलिए चीज-वस्तु बेचने वाले स्थानीय सामान को भी कोई बाहर का नाम दे देते हैं? बामनियों में ऐसे ही चिबड़ा बेचने वाले बच्चे बड़ोदा या सूरत का चिबड़ा कह अपना माल बेचते होंगे। लोग उस नाम से खिचकर खरीद भी लेते होंगे।

बच्चे गला फाड़ कर चिबड़ा बेचते रहे और यात्रियों को एक आने वाली, दो आनेवाली पुड़िया थमाते रहे। छोटे बच्चे

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

चिवड़ा देख मचलने लगे और बच्चे वाले यात्रियों को कुछ खीझ कर कुछ दूसरे यात्रियों की शर्म कर, अपने बच्चों का मुंह भरना ही पड़ा। सिंधी भाई चबर चबर कर चिवड़ा मेरे सामने खा रहे थे। चूंकि चिवड़े में नमक और मिर्ची होती है इस लिए यदि किसी व्यक्ति की ठीक नाक के नीचे ले जाकर आप उसे खायेंगे तो निश्चय ही सामने वाले के मुँह में पानी आ जायेगा। मेरे मुँह में पानी आ गया। मुझे सिंधी भाई पर कुछ क्रोध भी आया परन्तु मजबूर हो मैंने चिवड़े वाले को बुलाया।

एक साथ दो तीन हाथ मेरे आगे आ गये। मैंने सबसे नाजुक हाथ से एक पुड़िया ले ली और एक इकन्नी थमा दी। मैंने एक ही फंक्की ली और जबान झन्ना गयी। धत तेरे की। कितनी मिर्ची मिला रखी है।" मै सू सू करने लगा।

"सब जगह चार सौ बीसी। बदमाश हैं साले।" सांई बोले आपसे न खायी जाये तो--अपने लड़के की ओर इशारा कर— इसे दे दीजिये। और मजे से अपना चिवड़ा खाने लगे। मैं कुढ़ गया। नामाकूल कहीं का। अपने लड़के के लिए खुद अलग से चिवड़ा नहीं खरीद सकते। एक ही पुड़िया में काम चला रहे हैं और दूसरों को सलाह दे रहें। बांगरू कहीं का।

अब बस फिर से चलने लगी थी। मगर मुसाफिर अब बात करने के मूड में नहीं थे। सभी चुपचाप बैठे या खड़े थे। कुछ लोग ऊँघने भी लगे थे और बड़ी बेतकलुफी से अपना सिर किसी अपरिचित कंधे पर टिका रहे थे।

सीमा-नाके पर आ बस को आधा घन्टा रुकना पड़ा। कई महसूली सामान वाले बस में थे और सबको शुल्क जमा करनी

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy
थी। नाकेदार ने जब गाड़ी को चेक किया तो सांई की सीट के नीचे एक ट्रायसिकल निकली। नाकेदार ने पूछा—यह किसकी है।

"क्या इसका भी महसूल लगेगा ?" सांई ने आंखे फैलाकर पूछा और फिर सभी यात्रियों को ओर देख बोले—क्या अंधेर गर्दी है। अब अपने बच्चों के लिए भी कोई नयी चीज नहीं ला सकते।

बुदबुदाते हुए वे उतरे और महसूल चुकाया। बस अब नगर में थी। स्टैण्ड सामने था। वही शोर शराबा, कोलाहल और तांगे कुली और छोटे छोटे मजदूर बच्चे, बसों का जमघट पान, सिगरेट की दुकानें, और होटलों में बजने वाले रिकार्डस के तीखे स्वर, साग-सब्जी बेचने वाली तेज तर्रार मालिनी की भद्दी-भद्दी गालियां और चुलबुली छेड़खानियाँ।

मैं इक्के पर सवार हो घर जाते-जाते सोचने लगा—बच्चे पूछेंगे, डैडी हमारे लिए क्या लाए····मोटर लाये····सायकल लाये····? क्या मैं कह सकूँगा नहीं लाये बेटा? मैं शायद मुस्कुराकर रह जाऊँगा, बस।

———

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy